धर्मे ते धीयतां बुद्धिः
मनस्ते महदस्तु च

छठा वर्ष – द्वितीय अंक

जून 2021

सनातन संवर्धिनी

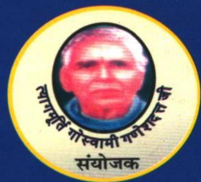

सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में महाकुम्भ 2021 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

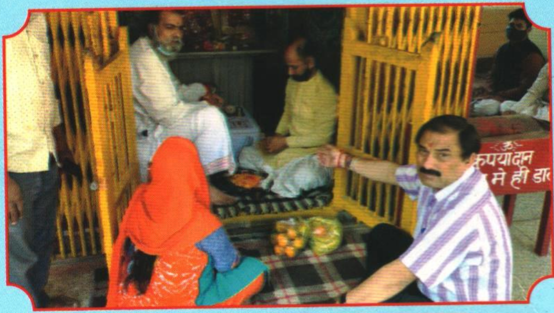

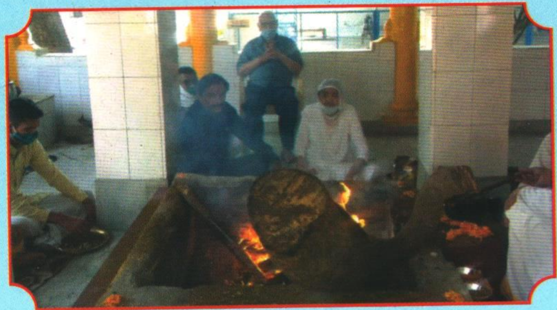

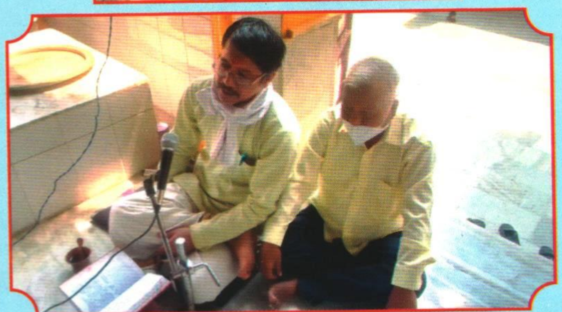

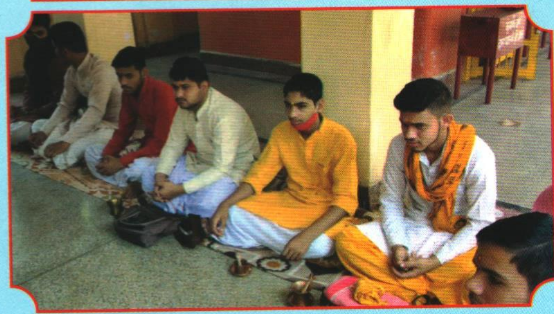

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी०) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र : दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर)

मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011.23586251, 23584016

शाखा कार्यालय-1 : सप्तऋषि आश्रम, सप्तसरोवर मार्ग, हरिद्वार, दूरभाष- 01334-261702

शाखा कार्यालय-2 : गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर 19-ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष : 0172-2543283

E-mail: sdprsabha@gmail.com

श्री सनातन धर्म महावीर दल द्वारा महा कुम्भ मेला 2021 के अवसर पर आयोजित शिविर की झलकियाँ

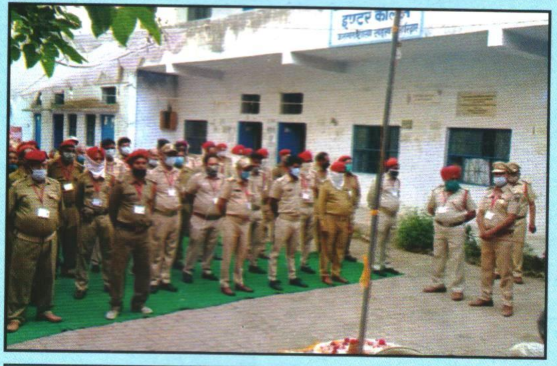

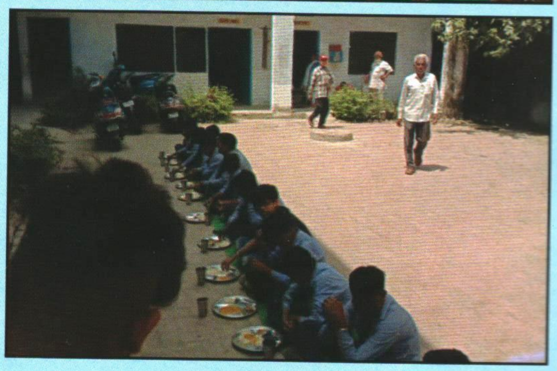

सनातन धर्म के निर्धारक सूत्र

डॉ० नन्द किशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

सनातन धर्म विश्व का सबसे अधिक प्राचीन, परिपक्व, अनादि और अनन्त धर्म है। सनातन का अर्थ है-शाश्वत् अर्थात् जो सदा से है और सदा रहेगा, जिसका न आदि है और न अंत है। सनातन धर्म निरंतर गतिशील है। भगवती गंगा के अविरल प्रवाह की तरह यह धर्म निर्बाध रूप से सृष्टि के आदि से लेकर आज तक निरन्तर प्रवहमान है।यह धर्म प्रत्येक युग-काल और देश-प्रदेश के लिए मंगलमय रहा है। प्रत्येक युग में और प्रत्येक स्थान पर इसकी प्रासंगिकता को देखते हुए इस धर्म को सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनिक धर्म कहा गया है। धर्म की नितान्त कठोरता और जड़ता धर्म के मानववादी और कल्याणकारी स्वरूप को समाप्त कर देती है। सनातन धर्म की यह एक महान विशेषता है कि यह अपने मूल रूप को सुरक्षित रखते हुए देश, स्थान और काल के अनुरूप स्वयं का मानव वादी स्वरूप बना लेता है। सनातन धर्म के मूल में भगवत्प्राप्ति के साथ साथ समग्र मानवजाति और यहाँ तक कि समस्त चराचर जगत के कल्याण का मांगलिक भाव निहित है। इस रूप में सनातन धर्म को कल्याणकारी धर्म, मंगलमय धर्म और शिवत्व से संयुत धर्म कह सकते हैं। यहाँ हम सनातन धर्म के स्वरूप और प्रभाव आदि का वर्णन न करते हुए केवल सनातन धर्म के कुछ निर्धारक तत्त्वों और मूल सूत्रों का उल्लेख करेंगे जो इस प्रकार हैं-

निर्गुण और सगुण का उपासक-सनातन धर्म सगुण और निर्गुण भगवान के दोनों रूपों का उपासक है। मूल रूप में सनातन धर्म भगवान को निर्गुण और निराकार मानता है । इस धर्म की अध्यात्म विद्या बड़े विस्तार से, बड़ी गहनता से और सूक्ष्मता से उस निराकार ब्रह्म के स्वरूप का निर्धारण करती हुई उसे त्रिगुणातीत स्वीकार करती है। वह अज है, नित्य है, अनादि और अनन्त है, शाश्वत और सनातन है। वह चैतन्यमय, ज्ञानमय, अमृतमय और आनन्दमय है। ऐसे विलक्षण स्वरूप वाला वह अरूप निराकार ब्रह्म सृष्टि की रचना के लिए अपनी आद्या शक्ति माया से संवलित होता है और इस संसार के रूप में अपना विराट रूप प्रकट करता है। यह संपूर्ण सृष्टि उस निराकार ब्रह्म के एक चौथाई अंश का ही साकार रूप है । वेद कहता है –

पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।

इस प्रकार यह संपूर्ण चराचर जगत और इस जगत की समस्त प्राकृतिक शक्तियाँ उस निराकार ब्रह्म के साकार रूप हैं। इस कारण सनातन धर्म में समस्त प्राकृतिक शक्तियों जैसे सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, वरुण, इन्द्र आदि में देवत्व का आधान करते हुए, इन्हें मूर्तिमान भगवान या देव स्वीकार किया गया है। उस परा शक्ति ने सृष्टि के सृजन, पोषण और संहार के लिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप में स्वयं को व्यक्त किया। इतना ही नहीं, उस परात्पर शक्ति ने अपने नारी स्वरूप को भगवती जगदम्बा और उसके विविध रूपों-महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के रूप में रूपांतरित किया। उस परब्रह्म ने ही राम, परशुराम, हनुमान, विष्णु, सीता, राधा आदि के रूप में भक्तों के कल्याण और संसार के उद्धार के लिए समय-समय पर अवतार लिया है। सनातन धर्म इन समस्त देवताओं और अवतारों के मन्दिर निर्माण कर और उनमें मूर्ति स्थापना करने में विश्वास रखता है। मूर्ति के माध्यम से भगवान की पूजा-अर्चना और उपासना करना सनातन धर्म का सर्वश्रेष्ठ सिद्धांत है।

अवतारवाद-सनातन धर्म की अवतारवाद में पूर्ण निष्ठा है। सनातन धर्म का अभिमत है कि जब जब पृथ्वी पर पापाचार बढ़ता है और धर्म की हानि होती है तब तब पृथ्वी पर पापाचार के भार को कम करने के लिए भगवान नए-नए रूप में अवतार ग्रहण करते हैं। गीता में भगवान कृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में अवतारवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए उद्घोष किया है कि सत्पुरुषों की रक्षा के लिए तथा पापियों के संहार के लिए मैं समय समय पर आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक युग में अवतार ग्रहण

करता हूँ–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

पितृ पूजन एवं श्राद्ध कर्म –सनातन धर्म पितृ–पूजन एवं श्राद्ध–कर्म में पूरी आस्था रखता है। यह धर्म माता, पिता, गुरु और अपने ज्येष्ठों तथा श्रेष्ठों के साथ–साथ कालक्रम से अपना जीवन–यापन कर पितृलोक के प्रस्थान कर गए अपने पूज्य पितरों के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव रखने का आदेश देता है। इसीलिए मातृ देवो भव, पितृ देवो भव और आचार्य देवो भव का आदर्श भाव सनातन धर्म के मूल सूत्रों में गिना जाता है। जो व्यक्ति अपने से बड़ों और अपने पूर्वजों का सम्मान नहीं करता वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं है। एक सच्ची और अच्छी संतान वह है जो अपने माता –पिता –गुरु और पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखती है, उनकी सेवा करती है । जब तक माता–पिता जीवित हैं पुत्र को और पुत्री को उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। सनातनी धर्मशास्त्र एक आदर्श पुत्र की परिभाषा देते हुए लिखता है

जीविते वचन करणात् क्षयाहे भूरि भोजनात्
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिधा पुत्रस्य पुत्रता ।।

अर्थात् पुत्र और विशिष्ट परिस्थिति में पुत्री का भी धर्म है कि वह जीवित अवस्था में माता –पिता की आज्ञा का पालन करें, उनकी मृत्यु हो जाने पर उनकी पुण्यतिथि को वार्षिक श्राद्ध और आश्विन मास के पितृ पक्ष में उनकी तिथि को श्राद्ध करें। साथ ही पितरों के उद्धार के लिए जो हरियाणा में पेहवा, पिण्डारा, फल्गू, कुरुक्षेत्र आदि, बिहार में गया जी तथा अन्य प्रदेशों में हरिद्वार, केदारनाथ, गढ़गंगा, प्रयागराज, काशी, नासिक आदि पवित्र तीर्थ स्थान है वहाँ जाकर पितरों के निमित्त पिंड दान करे। इस प्रकार आज्ञापालन, श्राद्ध कर्म और पिण्डदान जैसे पितृनिमित्तिक कर्म करनेवाला पुत्र ही सच्चा पुत्र होता है। सनातन धर्म सनातनता और परम्परा का धर्म है। इसी परम्परा के निर्वाह के लिए सनातन धर्म में श्राद्ध कर्म और पिण्डदान का विधान है। इन दोनों के माध्यम से ही वर्तमान जीवित पीढी अपनी पूर्ववर्ती दिवंगत पीढियों से भावनात्मक स्तर पर अदृश्य रुप से एक स्वस्थ, सुदृढ और मंगलकारी परम्परा के रुप में सदा सर्वदा के लिए जुड़ी रहती है।

पुनर्जन्मवाद–सनातन धर्म की सनातनता व वैश्विकता का मूलाधार सनातन धर्म के वे मूलसूत्र हैं जो सभी कालखण्डों एवं भूखण्डों में रहने वाले नर–नारियों को असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर जाने हेतु प्रेरित करते हैं। ज्ञान–प्राप्ति और अमृतत्व की अनुभूति की यह यात्रा एक जन्म तक सीमित न होकर अनेक जन्मों तक व्याप्त है। जन्म के बाद मृत्यु इस अनन्त यात्रा का मात्र एक पड़ाव है। मृत्यु के बाद पुन: जन्म ग्रहण कर और व्यक्त अवस्था में आकर जीवात्मा आगे की यात्रा प्रारम्भ करता है। इस प्रकार पुनर्जन्मवाद सनातन धर्म का एक मौलिक सिद्धांत है। पुनर्जन्मवाद के भय से ही व्यक्ति आगे के जन्मों में सुख–सम्पदा की कामना करता हुआ असत् कर्मों की ओर प्रवृत्त न होकर सत्कर्म में प्रवृत्त होता है।

भाग्य और कर्म की महिमा–भाग्य पर अटूट आस्था होते हुए भी सनातन धर्म कर्म की अपार महिमा को स्वीकार करता है। भाग्य और कर्म जीवनरथ के दो पहिये हैं। इनके समन्वय में ही जीवन का विकास है। पूर्वजन्मों के कर्म इस जन्म का भाग्य बनकर और इस जन्म के कर्मों से समन्वित होकर व्यक्ति को नाना क्षेत्रों में सफलता दिलाते हैं। साथ ही इस जन्म के कर्म आगामी जन्मों के लिए भाग्य भी बनते हैं। वेद, उपनिषदें और गीता कर्म के अक्षुण्ण महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं –

1. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्छतं समा:।
2. योगस्थ: कुरु कर्माणि सगं व्यक्त्वा धनंजय।

कर्म विजय-प्राप्ति का अमोघ अस्त्र है। तभी तो शास्त्र इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं और उद्घोष करते हैं कि विजय कर्म की अनुगामी है -

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

विश्वबन्धुता-विश्वबन्धुत्व का भाव सनातन धर्म की सर्वाधिक महनीय विशेषता है। यही वह धर्म है जो प्राणिमात्र में एक ही विराट् चेतना के अंश को स्वीकारता है। अतः महाद्वीपों, उपमहाद्वीपों व अनेक देशों में विभक्त हुआ विश्व सनातन धर्म के लिए एक परिवार है। तभी तो वैदिक ऋषियों ने वसुधैव कुटुम्बकं का उद्घोष किया है और विश्व के नर-नारियों को परामर्श दिया है कि वे परस्पर मित्रतापूर्ण दृष्टि से व्यवहार करें-

'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।'

इसी मैत्रीभाव के वशीभूत हो सनातन ऋषि जन-जन के जीवन की मंगलकामना करता हुआ गा उठता है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

आधुनिक भौतिक युग के अनेक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सिद्धान्त धर्म से ही निस्सृत हैं। आधुनिक समाजवाद विश्व में जिस सामाजिक और आर्थिक समानता की दुन्दुभि बजा रहा है उस सामाजिक समरसता और आर्थिक समानता का बीज सनातन धर्म में ही है जिसे वैदिक समाजवाद का नाम दिया जा सकता है। अर्थ के प्रति अतिमोह पाप है और यही पूंजीवाद का जनक है। पर वेद त्यागपूर्वक भोग की बात कहता है-

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।

वेद की अर्थव्यवस्था तो यह है कि परिवार-पोषण के लिए जो आवश्यक हो उसी धन पर व्यक्ति का अधिकार है और शेष पर समाज और राष्ट्र का अधिकार है। इस व्यवस्था का अतिक्रमण करने वाला चोर है और दण्ड का अधिकारी है -

यावत् भ्रियेत् जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनः।
अधिकं योऽभिमन्येत् स स्तेनः दण्डमर्हति।।

सनातन धर्म की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह धर्म संस्कार प्रधान धर्म है। यहाँ गर्भधारण से लेकर मृत्यु-पर्यन्त (अन्त्येष्टि संस्कार) सोलह संस्कारों की प्रक्रिया से गुजरता हुआ व्यक्ति निरन्तर सुसंस्कृत होता जाता है। वर्णव्यवस्था, आश्रम-व्यवस्था, सन्तमहिमा, गुरूमहिमा, सादा जीवन, उच्च विचार, जिओ और जीने दो, आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् आदि सनातन धर्म के अनेक सूत्र विश्व में मानवता को जीवित रखने के लिए आक्सीजन की भूमिका निभा रहे हैं।

निस्संदेह किसी भी धर्म के प्रतिपालन में श्रेष्ठ चिन्तन और सत्कर्म का महत्त्व होता है पर इनसे भी अधिक महत्त्व मानव-मन की शिव-संकल्पता का है। अगर मन का संकल्प शिव होगा तो मस्तिष्क में सद्विचार उत्पन्न होंगे और उनसे प्रेरित हो मानव की स्थूल देह सत्कर्म में प्रवृत्त होगी। सत्कर्मों के माध्यम से यह विश्व 'सत्यं शिवं सुन्दरं' के आदर्श रूप को प्राप्त करेगा। सनातन धर्म मन की शिव संकल्पता में अटूट विश्वास रखता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि प्राणिमात्र का चंचल मन शिव-संकल्प वाला बने :-

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

आभार

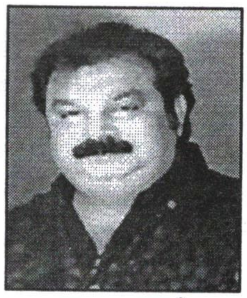

राजन शर्मा

बात दिनांक 20 मई 2021 दोपहर 12.00 बजे की है, एक ऐसे बच्चे का सन्देश आया जिसके पिताश्री मेरे परम मित्र थे और मैं उस बालक को लगभग 47 वर्ष पूर्व मिला था।

उसने अपील भेजी कि भैया एक परिचित जवान लड़का DMC हस्पताल लुधियाना में उपचाराधीन है और कल उसका आप्रेशन है उसे 1.50 लाख रुपये की आवश्यकता है। उसने लिखा कि मैंने 70 हजार का प्रबन्ध कर दिया है शेष राशि का प्रबन्ध आप उसके लिए सुनिश्चित करें।

मैंने उसी समय लुधियाना, फगवाड़ा व जालन्धर में अपने परिचितों को संदेश भेजा। श्री राजन शर्मा, डायरेक्टर लाल बहादुर शास्त्री स्कूल, लुधियाना, ईश्वर के भेजे हुए दूत के रुप में प्रकट हुए और उन्होंने अपने मित्रों और परिचितों से सम्पर्क किया। आप विश्वास मानिये कि दोपहर 1.00 बजे से लेकर रात्रि 10.00 बजे तक 9 घन्टों में श्री राजन शर्मा के प्रयासों से 1 लाख 25 हजार रुपये से अधिक धनराशि उनके बैंक अकाऊंट में चली गई थी।

आप सभी के आशीर्वाद से और ईश्वर की कृपा से उस नौजवान के दो सफल आप्रेशन हुए और अब वह स्वस्थ हो रहा है। श्री राजन शर्मा अगले दिन सुबह आप्रेशन से पहले DMC हस्पताल गये, ट्रस्टियों से बात करके नौजवान की सुविधाओं का प्रबन्ध किया और परिवार वालों का हौसला बढ़ाया।

श्री राजन शर्मा तथा उनके निम्न सहयोगियों को जिन्होंने करोनाकाल की इस कठिन घड़ी में, सनातन धर्म की अवधारणाओं के अनुसार परिवार की सहायता की मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। ईश्वर इन सबके जीवन में और खुशियाँ भरे और इन्हें समाज और मानवता की सहायता के लिए और अधिक सबल बनाए।

श्री हनी बाजवा	15000/- रुपये	श्री अभिनव बंसल	10000/-
श्री अनुज सेठ	10000/-	श्री ए.के. माथुर	10000/-
श्री आशु गुप्ता	10000/-	श्री अनिल ठाकुर	8000/-
श्री अविनाश गुप्ता	10000/-	श्री सुभाष खुराना	5000/-
श्री नरेन्द्र कपूर	10000/-	श्री अनुज भामी	5000/-
श्री दीपक कालड़ा	10000/-	श्री केवल कृष्ण अग्रवाल	5000/-
श्री डिम्पी जी	10000/-	डॉ. इन्द्रेश अग्रवाल	3100/-
डॉ. देशबन्धु	10000/-		

नोट: अगर किसी दानी सज्जन का नाम रह गया हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ।

डॉ० देशबन्धु
महामन्त्री
सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब), नई दिल्ली

सनातन धर्म कॉलेज एवम् श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक भारत रत्न महामना पं मदन मोहन मालवीय जी की 159 वीं जयंती के उपलक्ष्य में सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा सनातन धर्म शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में

"मालवीय जी का जीवन-दर्शन एवं श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता' विषय पर

दिनांक : 24 दिसम्बर, 2020, दिन : वीरवार, समय : 11.30 बजे प्रातः

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया।

''मालवीय जी का जीवन दर्शन एवं श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

डॉ० विजय शर्मा
संयोजिका वेबिनार
हिन्दी विभागाध्यक्ष

सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर) अम्बाला छावनी, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी) के संस्थापक धर्म के पुरोधा, भारतीय संस्कृति के उपासक, महान शिक्षाविद् सनातन मूल्यों के संवाहक भारत रत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की 159वीं जयन्ती के अवसर पर सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी और श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का विषय था-'मालवीय जी का जीवन दर्शन एवं श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. हरमेन्द्र सिंह बेदी, माननीय कुलाधिपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला थे। सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर) अम्बाला छावनी और श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक महामना मालवीय जी के प्रति कॉलेज प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र सिंह और सभा के प्रधान डॉ. शिव कुमार शर्मा व अन्य सभी पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति के माध्यम से अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलते रहने की अटूट परम्परा में विश्वास दिखाया।

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र सिंह जी ने महामना मालवीय जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि वह भारत के प्रथम और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। वास्तव में वह एक युगपुरुष थे दूरद्रष्टा थे जिन्होंने अपने युग की समस्याओं और आवश्यकताओं को बखूबी पहचाना। बिरले ही होंगे जिन्होंने अपने देश को इतने भावावेग से प्रेम किया और देशवासियों की इतनी निस्वार्थ सेवा की। उनके लिए देशभक्ति ही ईश्वर भक्ति और ईश्वर भक्ति ही देशभक्ति थी। मालवीय जी के विचार थे कि राष्ट्र की उन्नति तभी सम्भव है जब वहाँ के निवासी सुशिक्षित हों। शिक्षा ही समाज और राष्ट्र की नींव होती है। भारत की नीवं मजबूत करने हेतु वे शिक्षा का प्रचार-प्रसार चाहते थे। इसी सपने को साकार करने के लिए उन्होंने 4 फरवरी 1916 को बनारस में काशीहिन्दू विश्वविद्यालय और 16 मई 1916 को लाहौर में सनातन धर्म कॉलेज की स्थापना की। आज भी सनातन धर्म कॉलेज उनके द्वारा स्थापित मूल्यों के अनुसार विद्यार्थियों को परम्परागत तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से समन्वित शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र सेवा के लिए तैयार कर रहा है। मालवीय जी के जीवन दर्शन और श्रीमद्‌भगवद्‌गीता पर वेबिनार के आयोजन के लिए उन्होंने कॉलेज के हिन्दी विभाग को

बधाई दी और सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा व शिक्षा समिति के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा मालवीय जी के आशीर्वाद से ही यह संस्था आज उत्तर भारत की अग्रणी संस्थाओं में से एक है जो शिक्षा व अन्य सभी क्षेत्रों-खेलकूद, एन.एस.एस, एन.सी.सी., सांस्कृतिक गतिविधियों में सदैव उत्कृष्टता के नए मापदंड स्थापित कर रही है। इस अवसर पर लगभग 200 प्रतिभागियों ने इस वेबिनार में भाग लिया।

हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं वेबिनार की संयोजिका डॉ. विजय शर्मा ने वेबिनार के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मालवीय जी के जीवन में गीता का विशेष महत्व था, और इस वर्ष गीता जयन्ती व मालवीय जयन्ती साथ-साथ है यह अत्यंत सुखद संयोग है। मालवीय जी का मानना था कि मानवकल्याण की भावना से ओतप्रोत यह ग्रंथ जीवन के सभी पक्षों को सुलझाने में समर्थ है।

मदन मोहन मालवीय जी को यह श्लोक अत्यंत प्रिय था -

न त्वहं कामये राज्यं
न स्वर्ग नाऽपुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानां
प्राणिनामार्तिनाशम्।।

"मुझे पृथ्वी का समृद्ध राज्य नहीं चाहिए और मुझे मोक्ष भी नहीं चाहिए। मेरी तो यही उत्कट कामना है कि दु:खों से तपाए हुए प्राणियों का कष्ट दूर करूँ।"

अपनी महायात्रा से लगभग एक सप्ताह पूर्व ही उन्होंने अपने अंतरंग साथियों से कहा था, "मुझे मृत्यु के समय काशी में मत ले जाना, मैं अभी मुक्ति नहीं चाहता। मेरी इच्छा है कि एक ओर जन्म में मानवों की सेवा अभी करूं।"

मालवीय जी ऐसे काल में हुए (सन् 1861-1946) जब देश जाति और धर्म पर बहुत बड़ा संकट था। उन्होंने उसके निवारण के लिए अपने कर्म की पूरी शक्ति लगा दी। उनका जीवन धर्मनिष्ठ, भगवद्भक्ति, दीनबन्धु, समाजसेवी के रूप में विकसित हुआ। मालवीय जी प्राचीन ऋषियों के सच्चे प्रतिनिधि थे, उन्होंने अपने लेख 'कृष्णास्तु भगवान स्वयम्' में अपनी इच्छा व्यकत की है -

"मैं बहुत चाहता हूँ कि भगवान कृष्ण के विषय में जो मेरा विश्वास है उसका सारे जगत में प्रचार करूं। उनके चरणों में मेरी जो श्रद्धा और भक्ति है, उसको मनुष्य मात्र के हृदय में स्थापित करूं, किन्तु मैं अनुभव करता हूँ कि मुझमें अभी इतनी योग्यता नहीं कि मैं इस ऊँचे मनोरथ को पूरा कर सकूं तथापि मैंने भक्तवत्सल भगवान के चरणों में आश्रय ले लिया है, इसलिए मुझे भरोसा है कि एक दिन वह मेरा मनोरथ सिद्ध अवश्य करेगा उन्होंने कहा -"गीता को सारे संसार ने अनमोल रत्न माना है। आप लोगों का धर्म है कि इसकी रक्षा और प्रचार करें। बस यही प्रार्थना है।" उन्होंने हृदय से कहा कि - हर एक विद्यार्थी और अध्यापक गीता प्रवचन की कथा को नोट करें और उससे आजीवन लाभ उठाए। संसार में झगड़े होते हैं, उपद्रव होंगे और होते हैं। ऐसे संसार में ऐसी स्थिति में जीवन लाभ देने वाला अमूल्य ग्रंथ गीता ही है। इसमें धर्म और राजनीति का मेल है। पृथ्वी मंडल पर ऐसी उत्तम अन्य पुस्तक नहीं है, जब आपत्ति हो तब गीता से उत्तर पूछें और अनुकूल उपाय करें। संसार में अनेक ग्रंथ हैं पर इसकी समानता का एक भी नहीं है। यह सार्वकालिक और सार्वभौमिक ग्रंथ है जो विश्वकल्याण के सूत्रों का व्याख्याता है। उन्होंने स्वयं गीता को जिया वह सच्चे अर्थों में तपस्वी थे।

मानसिक तप-श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित मानसिक, वाचिक, शारीरिक तप के वे साधक थे। काम, क्रोध-लोभ, मोह से स्वयं को बचाना, सदा शुद्ध संकल्प करना, विषय वृतियों पर विजय प्राप्त करना, व्यवहार में छल कपट से अपने को दूर रखना उनका मानसिक तप था।

वाचिक तप-असत्य, दुःखदायी, अप्रिय और खोटे वचनों का त्याग तथा प्रिय, सत्य, मधुर शब्दों का प्रयोग उनका वाचिक तप था।

शारीरिक तप-दूसरों की सहायता करना, समाज की सेवा करना, देश और जाति के लिए अपने शरीर को होने वाले कष्टों की परवाह न करना उनका शारीरिक तप था।

महामना का कार्यक्षेत्र अत्यंत ही विस्तृत एवं व्यापक था। समाजसेवा का शायद ही ऐसा कोई पक्ष हो जो उनके कार्य परिधि में न आया हो। सनातन धर्म व संस्कृति का उत्थान व प्रचार, ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में वृद्धि, प्रगतिशील सिद्धांतों का प्रतिपादन, राष्ट्रीयता की भावना का विकास व लोकतांत्रिक मर्यादाओं की प्रतिष्ठा, हिन्दू हितों की रक्षा और वंचितों का उद्धार सामाजिक कुरीतियों का विरोध और स्वयं सेवकों का संगठन गौमाता की सेवा और मल्लशालाओं का उद्घाटन आदि देशकाल के अनुकूल सँस्कृति को विकास में मालवीय जी ने अमूल्य योगदान दिया उनका कहना था -

मेरा देश, स्वदेश
मेरा हृदय का प्रथम व शाश्वत प्रेम
मेरा रक्त, मेरा श्वेद और मेरे विचार
सदैव इसी को समर्पित रहेंगे।

ऐसे महान देश भक्त को हम कोटि-कोटि नमन करते हैं।

हिन्दी विभाग की प्रवक्ता डॉ. सरयू शर्मा ने वेबिनार के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता का परिचय दिया और बताया कि प्रो. हरमेन्द्र सिंह बेदी 35 वर्षों तक गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के हिन्दी विभाग में अध्यापन किया और अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय में भाषा विभाग में एक वर्ष तक अध्यक्षपद पर कार्य किया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य हैं। प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी वर्तमान में केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश कुलाधिपति हैं। पिछले चार दशकों से पंजाब के हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में इनकी सक्रिय भूमिका है। गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध उत्तरी भारत के मध्यकालीन हिन्दी साहित्य को प्रकाश में लाने का श्रेय भी इनको जाता है। पंजाब सरकार द्वारा शिरोमणि हिन्दी साहित्यकार सम्मान से अलंकृत तथा 2017 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा हिन्दी सेवी पुरस्कार से सम्मानित हैं। पंडित श्रद्धाराम फिलोरी ग्रंथावली के तीन खण्डों के रचयिता प्रो. हरमेन्द्र सिंह बेदी ने पं. मदन मोहन मालवीय जी के जीवन व पंजाब में उनके द्वारा किए गए महान कार्यों का स्मरण करते हुए गीता के प्रति उनकी निष्ठा व विश्वास की बात की।

उन्होंने पंजाब में गीता के महत्व पर बात करते हुए कहा कि प्राचीन काल में पंजाब के सप्त सिन्धु कहा जाता था पंजाब की भूमि को समुद्र जैसी सात नदियां सींचती थी। ऋग्वेद में पंजाबी संस्कृति, पंजाब की विरासत और पंजाब के भूगोल पर विस्तृत चर्चा है। इतिहासकारों ने ऋग्वेद को पंजाब का पहला प्रामाणिक सामाजिक दस्तावेज माना है। श्रीमद्भगवद् गीता का उवाच श्री कृष्ण ने सप्तसिन्धु की धरा पर ही (कुरुक्षेत्र में) अर्जुन को मानवीय संश्लिष्ट संबंधों को दार्शनिक एवं अध्यात्मिक चिन्तन के माध्यम से दिया और वही संदेश पांच हजार इक्कावन वर्षों के बाद दुनिया का सर्वश्रेष्ठ दर्शन ग्रंथ सिद्ध हुआ। इसका श्रेय भी पंजाब की गरिमामयी परम्परा को जाता है। उन्होंने कहा-पंजाब की भूमि पर श्रीमद्भगवद्गीता की अनेक टीकाएं सम्पन्न हुई। आज भी पंजाब के ग्रंथालयों में वह पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। पंजाब में निर्मल सन्तों, उदासीन आचार्यों एवं सियापंथी डेरे पर गीता का अध्ययन होता था। 20वीं शताब्दी तक श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों को गुरुमुखी लिपि में कैसे लिखा जाए उपरोक्त डेरों में विद्यार्थियों को इसका अभ्यास कराया जाता था और उस समय पूरा

पंजाब गीता के रंग में रंगा हुआ था, गीतामय था। पंजाब के हिन्दी, पंजाबी एवं उर्दू साहित्य पर भी गीता का गहन प्रभाव पड़ा। पंजाबी भाषाविज्ञानी तो यहाँ तक मानते हैं कि गीता जैसी अमरकृति के कारण पंजाबी भाषा में तत्सम् शब्दावली की बहुतायत है। पाणिनी ने संस्कृत का पहला व्याकरण पंजाब की भूमि पर ही रचा। इस भूमिका के साथ हम श्रीमद्‌भगवद्‌गीता की सार्थकता को पंजाब के संदर्भ में समझ सकते हैं। मैं हार्दिक बधाई देता हूँ श्री सनातन धर्म सभा (पंजाब) एवं सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी के हिन्दी विभाग को कि मालवीय जयन्ती के अवसर पर अपने संस्थापक को इस रुप में श्रद्धांजलि अर्पित की। वास्तव में यही उस महामना के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है कि गीता सबके जीवन में उतरे। प्रो. बेदी ने कहा कि यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि पंजाब से पुरातन तक्षशिला विश्वविद्यालय में दक्षिण एशिया के विद्वानों को श्रीमद्‌भगवद्‌गीता पाठ्य पुस्तक के रुप में पढ़ाई जाती थी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने गीता को विश्व विरासत के रूप में स्वीकार करते हुए इसकी रचना का श्रेय पंजाब की पावन धरा को दिया है। गीता के कारण पंजाब पूरे विश्व में सांस्कृतिक ज्ञान की उत्स भूमि के रूप में जाना गया और पंजाबियों के लिए श्रीमद्‌भगवद् गीता का यह आशीर्वाद अनुपम और अनूठा है।

सनातन धर्म शिक्षा समिति चण्डीगढ़ के उपप्रधान डॉ. विवेक शर्मा ने वेबिनार के सफल आयोजन के लिए सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब व सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी के हिन्दी विभाग को साधुवाद दिया और वेबिनार के मुख्य अतिथि का विशेष धन्यवाद करते हुए सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया एवं ऐसे आयोजनों को शिक्षा जगत के लिए प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक कहा।

"मालवीय जी की जीवनदीन एवं श्रीमद्भगवद् गीता" का आयोजन

aper.ajitsamachar.com

सनातन धर्म कालेज में वेबिनार आयोजित

ਪੰਜਾਬੀ ਜਾਗਰਣ

ਹਰਿਆਣਾ ਕਾਲਜ 'ਚ ਵੈਬੀਨਾਰ ਕਰਵਾਇਆ

घर में मनाएं भारत रत्न पंडित मदनमोहन मालवीय का जय

हरियाना, 12दिसम्बर (रोहित): श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया जिसमें इंद्रमोहन गोस्वामी कार्यवाहक प्रधान, सनातन धर्म महाबीर दल के प्रधान महंत स्वरुपबिहारी शरण, महामंत्री उपिंदर शर्मा, के महामंत्री आर मदान, महासचिव डा.देश बन्धु शर्मा , आग्रेनाईजर डा. गुरदीप कुमार शर्मा, डॉ नन्द किशोर विशेष तौर पर शामिल हुए। बैठक की कार्रवाई प्रैस को जारी करते हुए महासचिव डा.देश बन्धु शर्मा, आग्रेनाईजर डा. गुरदीप कुमार शर्मा ने बताया कि श्री सनातन धर्म

भारत रत्न महामना पंडित मदनमोहन मालवीय साथ है जानकारी देते हुए डा. डा.देश बन्धु शर्मा तथा डा.गुरदीप कुमार शर्मा ।

विश्वविद्यालय (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) के संस्थापक, सनातन धर्म महाविद्यालय लाहौर (अ?बाला कैंट) की स्थापना के प्रणेता, महान शिक्षक, उच्च कोटि के वकील, अद्भुत समाज सुधारक, श्रेष्ठ नेता, उत्सर्गी

अध्यक्ष, स्वतंत्रता संग्राम के समय अनेक समाचार पत्रों जैसे - लीडर,हिन्दुस्तान टाईम्स, मर्यादा, सनातन धर्म संग्रह के अद्वितीय संपादक–बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारत रत्न महामना पंडित मदनमोहन

दिसम्बर 2020 को मनाई देश विदेश में फैली कोरोना की समस्या को दृष्टिगत रखते सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजा श्री सनातन धर्म शिक्षा समि पदाधिकारियों ने सभासदों के स और प्राणों की सुरक्षा हेतु निर्णय है कि इस वर्ष मालवीय जी की का कार्यक्रम ससत्रषि आश्रम ह में सामूहिक रूप से आयोजित न क सभी सनातन धर्म सभाएं, महाबीर तथा सनातन धर्म शिक्षण सं अपने-अपने स्थान पर आयोजित । ईश्वर से प्रार्थना कि वह आप परिवार, सगे सम्बन्धियों तथा इष्ट मि को इस कोरोना काल में स्वस्थ जीव प्रदान करे।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की 159वीं जयंती के उपलक्ष्य में

डॉ० राजीव पराशर
प्राचार्य

जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज हरियाणा में कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी के सचिव डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा जी के दिशा–निर्देश के अनुसार प्रिसिपल डॉ. राजीव कुमार जी की अध्यक्षता में पं. मदन मोहन मालवीय जी की 159वीं जयंती के अवसर पर "भारत रत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी का सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्र में योगदान" विषय पर नैशनल वेबिनार करवाया गया। इस वेबिनार का संचालन प्रो. राजीव कुमार शर्मा द्वारा किया गया। इस वेबिनार के आरम्भ में कॉलेज प्राचार्य डॉ. राजीव कुमार जी ने मुख्यातिथि कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी के प्रधान डॉ. शिव कुमार (प्रधान श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब), डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा (सचिव जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज हरियाणा), श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी (कार्यवाहक प्रधान), डॉ. देशबन्धु (कार्यवाहक प्रधान श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति), श्री उपेन्द्र शर्मा (महामंत्री), डॉ. आर.पी. विज (वित्त मंत्री व प्रशासक सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार), डॉ. विवेक शर्मा, (उपप्रधान श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति), श्री डी.आर. मदान (सचिव दिल्ली) और वेबिनार में शामिल अन्य विद्वतजनों का स्वागत किया। प्राचार्य डॉ. राजीव कुमार जी ने पं. मदन मोहन मालवीय जी के जीवन परिचय संबंधी विचार भी सांझा किए। उन्होंने हरियाणा जिला होशियारपुर में स्थित जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज संबंधी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह कॉलेज पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से मान्यता प्राप्त कॉलेज है, जो कि 1945 से अब तक निरंतर विकास करता हुआ इस क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। उन्होंने बताया कि इस कॉलेज को उत्कृष्टता तक पहुंचाने में कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी के प्रधान डॉ. शिव कुमार, सचिव डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा और कार्यकारिणी प्रधान डॉ. देश बंधु जी का विशेष योगदान रहा है। इस अवसर पर उन्होंने पं. मदन मोहन मालवीय जी को याद करते हुए कहा कि मालवीय जी के जीवन में गीता का विशेष महत्व था। उनका मानना था कि गीता सार्वभौमिक, सर्वकालिक मानव कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है। जो जीवन के सभी पक्षों को सुलझाने के सूत्र प्रदान करती है। मालवीय जी की परिकल्पना विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिए तैयार करना था। इस वेबिनार के प्रमुख प्रवक्ता एल.एस.डी सीनियर सैकंडरी स्कूल, बस्सी दौलत खान के प्राचार्य श्री अनिल हांडा और जी.जी.डी.ए.डी कॉलेज के इतिहास विभाग के प्रमुख प्रो. सुरेश कुमार थे। प्राचार्य अनिल हांडा ने वेबिनार के दौरान पं. मदन मोहन मालवीय जी के जीवन, उनके सामाजिक राजनीतिक पक्ष पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने बताया कि मालवीय जी का जीवन सरल और साधारण था। तो सामाजिक, धार्मिक जीवन भव्य और विराट था। मनु स्मृति में जो दस गुण हैं वह सारे गुण उनके व्यक्तित्व में छलकते थे। धर्म उनकी मूल प्रेरणा थी। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष में धर्म को नहीं छोड़ा चाहे शिक्षा का क्षेत्र रहा हो, चाहे राजनीति

का, चाहे सामाजिक क्षेत्र हो उन्होंने कभी भी शास्त्र निष्ठा को नहीं छोड़ा। गोचरण के लिए भी उन्होंने भूमि को परिश्रम से खरीदा था। उन्होंने सनातन संस्कृति को बचाने के लिए गांव-गांव में भगवद् गीता का संदेश दिया। गांव में पानी के कुएं को प्रत्येक जाति धर्म के लिए एक कुआं होने पर जोर दिया कि कुआं सभी के लिए सांझा होना चाहिए। गंगा नदी जो कि सनातन धर्म का प्रतीक है उस पर समकालीन ब्रिटिश सरकार ने प्रस्ताव रखा कि 'हर की पोड़ी' से पानी के लिए नदी बनाई जाए इस प्रस्ताव को मालवीय जी ने निरस्त कर इसकी निंदा की। मालवीय जी ने कहा था कि जब तक शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दु जाति आगे नहीं बढ़ती तब तक उनका विकास संभव नहीं है। श्री अनिल हांडा ने बताया कि मदन मोहन मालवीय जी वकील थे। इसके इलावा अध्यापक, पत्रकार और राजनीतिक नेता भी रहे फिर भी उनकी जीवन शैली में धर्म के प्रति विशेष निष्ठा रही। मालवीय जी ने 'द इम्यूनस आफ गाड' पुस्तक लिखी जो कि उनकी दार्शनिक भित्ती को दर्शाती है। प्रो. सुरेश कुमार ने इस वैबिनार के दौरान कहा कि पं. मदन मोहन मालवीय जी करोड़ो में एक महान व्यक्ति थे। उन्होंने अपने आम जीवन को उच्च कोटि का बनाया और इसके इलावा उनके विशेष कार्यों के कारण उनको भारत रत्न सम्मान भी मिला। प्रो. सुरेश कुमार ने उनके जीवन के बारे बात करते हुए कहा कि वह एक गरीब घराने और मालवे क्षेत्र से संबंधित थे, इस कारण उनके नाम के साथ मालवीय शब्द जुड़ गया। बचपन में वह छोटी-छोटी नाटक मंडली बनाकर नाटक खेलते थे, इस कारण उनमें नेतृत्व की भावना पैदा हुई। उन्होंने छुआ-छूत के खिलाफ आवाज उठाई थी। इसके इलावा उन्होंने भारत की स्वतंत्रता में अपनी भूमिका निभाई। चार बार वह कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। मालवीय जी ने 'भारतीय भवन पुस्तकालय' की स्थापना भी की। उन्होंने ही 'सत्यमेव जयते' का प्रचार किया। 1914 में सर्वभारतीय सेवा समिति की स्थापना की थी। उन्होंने अछूत लोगों के साथ गंगा किनारे मंत्रणा की। प्रो. सुरेश कुमार ने बताया कि मालवीय जी वक्ता के रूप में बहुत प्रसिद्ध थे। लखनऊ पैकट का विरोध उन्होंने खुलकर किया था। उन्होंने सभी धर्मों के बीच समानता बनाने का यत्न किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए चंदा इकट्ठा किया। प्रो. सुरेश कुमार जी ने बताया कि उन्होंने कभी भी निजी हित के लिए दान-दक्षिणा नहीं ली। मालवीय जी ने लाला लाजपतराय के साथ साईमन कमिशन का विरोध किया था। मालवीय जी ने कांग्रेस नेशलिस्ट पार्टी का निर्माण किया था। स्वेदशी बाईकाट में उन्होंने बंगाल के बटवारे का विरोध किया था। प्रो. सुरेश कुमार ने कहा कि उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि एक गरीब परिवार से संबंधित होते हुए भी उन्होंने अपने व्यक्तिव से जीवन में उच्च स्थान हासिल किया।। इस वैबिनार में लगभग सौ से अधिक सदस्य जुड़े थे। अंत में प्रो. अनिल कुमार (कम्पयूटर विभाग) ने इस वैबिनार में शामिल सभी मेहमानों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर डॉ. जसवंत सिंह, डॉ. जसपाल सिंह (पंजाबी), प्रो. एम.एल. कौशल, डॉ. नीरज संघर, डॉ. हरविंदर कौर, प्रो. फूला रानी, प्रो. मेजर मोहम्मद, डॉ शुचि शर्मा, एकता शर्मा, श्री राकेश जरयाल, श्री निर्मल सिंह, श्री इंद्रजीत सिंह, श्री विजय सिंह और कॉलेज का टीचिंग और नान-टीचिंग स्टॉफ उपस्थित था।

महाकुम्भ पर्व 2021 में सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में त्रिदिवसीय शतचण्डी महायज्ञ एवं एक दिवसीय रुद्राभिषेक का आयोजन

महाकुम्भ पर्व 2021 के अवसर पर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित शतचण्डी महायज्ञ 9 मार्च 2021 से प्रारम्भ एवं 12 मार्च 2021 को पूर्णाहूति के साथ सम्पन्न हुआ।

सहस्रं कीर्ति स्नानं माष स्नानं शतानि च
वैशखे नर्मदा कोटि कुम्भ स्नाने तत्फलम
अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेय शतानि च
लक्षं प्रदक्षिणा भूमें कुभ स्नाने तत्फलम।

महाकुम्भ अर्थात् पर्व पर किए गए यज्ञ, अनुष्ठान, स्नान, दान का सहस्रगुना फल मिलता है। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा शतचण्डी महायज्ञ और रूद्राभिषेक समस्त प्राणिमात्र के कल्याण की भावना से किया गया और इस महामारी से सभी की आरोग्यता के निमित्त संकल्प किया गया।।

शिव जो हैं सहांर के कारक हैं, अत: इस महामारी का संहार करेंगे और देवी शक्ति स्वरूपा या या देव सर्वभूतेषु शक्ति रुपेण संस्थिता, नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम:

सर्वभूतेषु सभी भूत (प्राणियों) को शक्ति प्रदान करें, इसलिए यह शिव शक्ति महायज्ञ माँ भगवती गंगा के पावन तट एवं भगवान भोलेनाथ के सान्निध्य में द्वादश (12) ब्राह्मणों द्वारा किया गया। 9 मार्च 2021 से प्रारम्भ हुए इस यज्ञ में प्रतिदिन गणपति पूजन, कलश पूजन, नवग्रह पूजन, मां भगवती का पूजन एवं सम्पुटित दुर्गा सप्शती पाठ सम्पुटित मंत्र

''व्याप्तं त्वैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
सर्व काले महामारी सैव सृष्टि र्भवत्यजा
स्थितिं करोति भूतानां सैव काली सनातनी''

अर्थात् इस ब्रह्माण्ड में रहने वाले सम्पूर्ण भूतों (प्राणियों) की इस महामारी में रक्षा करें। इस महामंत्र से दुर्गा सप्तशती का पाठ किया जाता रहा।

प्रात:काल गणपति देवताओं का पूजन पाठ तदुपरान्त प्रतिदिन हवन किया जाता रहा। 11 मार्च 2021 को पूजन पाठ एवं तदुपरान्त हवन एवं पूर्णाहुति डाली गई।

12 मार्च 2021 को सोमवती अमास्या के दिन भगवान गंगेश्वर महादेव का पूजन रुद्राभिषेक एवं हवन पूर्णाहुति डाली गई।

यह महायज्ञ सप्तऋषि आश्रम की प्राचीन यज्ञशाला में किया गया। इस यज्ञशाला में ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त की प्रेरणा से भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जी ने 1954 में देश की सुदृढ़ता और देश की अमन शांति के लिए अखण्ड अग्नि प्रज्वलित की थी। जिसमें 1954 से अखण्ड हवन यज्ञ चल रहा है। शतचण्डी का यह यज्ञ सप्तऋषि आश्रम मंदिर के मुख्य पुजारी पं. सुबोध बड़ोला तथा उनके अधिनस्थ 11 अन्य पण्डितों द्वारा सम्पन्न किया गया।

1. महन्त स्वरूप बिहारी शरण
2. सुश्री लक्ष्मी सिंह
3. श्री राकेश विज, पालमपुर
4. सुश्री अन्जना सहगल
5. डॉ॰आर॰पी विज, प्रशासक
6. श्री विनोद कुमार सैनी, प्रबन्धक
7. श्री सत्य प्रकाश सक्सेना, सहा. प्रबन्धक

द्वारा यह यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया गया।

महा कुम्भ मेला मार्च 2021 रिपोर्ट

इस बार महा कुम्भ मेले का दायित्व श्री महावीर दल पंजाब के कार्यकारी प्रधान श्री मदनलाल लैहरी, श्री जनक राज बावा, डॉ० सतपाल नाभा को सौंपा गया था। जिन्होंने श्री सतवन्त सिंह सूदन महामंत्री को साथ लेकर सभी कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किये।

सेवा शिविर श्री सनातन धर्म मिथिलेश इण्टर कॉलेज खड़खड़ी में लगाया गया जिसमें लगभग 125 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। श्री अजय शर्मा अतिरिक्त दलपति, श्री सुखविन्दर सिंह अतिरिक्त दलपति, श्री अनिल अरोड़ा, श्री नरसी राय उपदलपति ने फील्ड की डयूटी निभाई। नंगल यूनिट द्वारा लंगर सेवा की गई श्री प्रेम पारीख तथा पवन कपिल ने दफतर का कार्य संभाला। इसके साथ-साथ उन्होंने फील्ड में भी डयूटी दी। श्री सतपाल ब्रह्मचारी, डॉ. अविमुक्तानन्द महाराज रामकृष्ण जी निर्धन निकेतन तथा अन्य संत मुख्य अतिथि के रूप में कैम्प में पधारें तथा स्वयं सेवकों का मार्गदर्शन किया। डॉ. अविमुक्तानन्द ने कहा कि सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा तथा सनातन धर्म महावीर दल ही भारत की ऐसी संस्थाएं हैं जो सनातन धर्म का प्रचार करती हैं तथा सन्तों का आदर सम्मान करती है। ऋषि रामकृष्ण जी ने कहा कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा तथा श्री सनातन धर्म महावीर दल निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करता है। जिसका मुख्य उद्देश्य नर सेवा नारायण सेवा है। सभी संतों ने कहा कि सनातन धर्म महावीर दल एवं श्री स.ध.प्र.स. को जब भी हमारी जरूरत होगी हम हर समय सहयोग के लिए तैयार हैं। सनातन धर्म की सभी यूनिटों ने तन, मन, धन से कुम्भ मेले को सफल बनाने के लिए अपना विशेष योगदान दिया। महाकुम्भ मेला हरिद्वार 2021 के कुम्भ मेला अफसर के आदेशानुसार महावीर दल के स्वयंसेवकों की डयूटी थाना रोड़ी बेलवाला के अधीन लगाई गई, जिसके अधीन हर की पौड़ी, शिवघाट, सुभाष घाट तथा सी.सी. टावर से लेकर चण्डीपुल का क्षेत्र आता था। घाटों पर स्नान के इलावा अखाड़ा मार्ग पर अखाड़ों की शाही स्नान में भी महावीर दल के स्वयंसेवकों की डयूटी लगाई गई। मुख्य डयूटी अखाड़ों के सन्तों को रथों से सन्तों के वाहनों को पैदल मार्ग तक रोककर खाली करवाना था। यहाँ पर दूरदर्शन द्वारा प्रोग्राम लाइव किया जा रहा था। यहाँ पर सैक्टर मैजिस्ट्रेट तथा अन्य अफसरों द्वारा सन्तो का स्वागत किया जाता था। इसके इलावा स्वयंसेवकों मन्दिरों और अखाड़ों में भी सेवा करने जाते रहे हैं।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा एक लाख रुपया, महावीर दल जिला बठिण्डा, हेड ऑफिस माईसर खाना द्वारा 51000, जिला अमृतसर जालन्धर द्वारा 40,000, रामा मण्डी द्वारा 31000, जिला पटियाला द्वारा 51,000, फिरोज़पुर द्वारा 15,000, अबोहर द्वारा 11,000, फाजिल्का 11,000, तलवाड़ा 21,000, धूरी 12,000, बठिण्डा लोकल 11,000, लुधियाना 11,000, केवल अग्रवाल लुधियाना द्वारा 45,000 का राशन, हनुमानगढ़ द्वारा 23,000, श्री गंगानगर द्वारा 21,000, पक्का सारना द्वारा 11,000, गोलुवाल द्वारा 11,000, नंगल द्वारा 15,000, जिला गुरदासपुर द्वारा 18,000 तथा अन्य लोगों ने भी यथाशक्ति सहयोग दिया।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा मलेरकोटला द्वारा शेष राशन महावीर दल नाभा के सहयोग से दिया

गया। श्री सनातन धर्म महावीर दल भण्डारा कमेटी द्वारा श्री हनुमान लंगर कमेटी मलेरकोटला के सहयोग से सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में भी राशन भेजा गया।

इस मौके पर श्री सनातन धर्म महावीर दल द्वारा 11,000 मास्क श्री मंजू नाथ जी IPS और श्री दीपक रावत IAS को 11,000 कुम्भ डयूटी पर लगे सभी पुलिस कर्मियों तथा अन्य स्वयंसेवकों के लिए भेंट किए गए। श्री के.के. अग्रवाल जी लुधियाना द्वारा भेजे गए मास्क भी भेंट किए गए। श्री मंजू नाथ SP मेला द्वारा एक समारोह में यह मास्क प्राप्त किए गए।

पुलिस प्रशासन द्वारा महावीर दल के स्वयं सेवकों के लिए टोपी और जैकेट भी भेंट की गई।

महंत स्वरूप बिहारी शरण
प्रधान
श्री सनातन धर्म महावीर दल

विचार-मंथन

डॉ. आर.पी. विज
प्रशासक
सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार

1. सदा प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं – आवश्यकताएं कम करें, और परिस्थितियों में तालमेल बिठायें।
2. आदमी काम की अधिकता से नहीं – वरन् उसे भार समझकर अनियमित रूप से थकता है।
3. जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।
4. आलस्य से बढ़कर अधिक घातक और समीपवर्ती शत्रु दूसरा नहीं।
5. ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है, जैसे दीमक लकड़ी को।
6. जो दूसरों की मुसीबत में काम आता है, उस पर कभी मुसीबत नहीं आती।
7. किसी दूसरे को मुसीबत में देखकर हंसने का मतलब है, कि आप बहुत जल्द दूसरों को भी अपने ऊपर हंसने का मौका देने वाले हैं।
8. दूसरों की भूलों से बुद्धिमान लोग भूलें सुधारते हैं।
9. भारत में जब तक बड़े बुर्जुगों का सम्मान है, तब तक भारतीय संस्कृति जीवित है।
10. सच्ची बड़ाई उसी की है, जिसकी शत्रु भी सराहना करें।

पुण्य तिथि पंडित अमरनाथ शर्मा 17 फरवरी 2021
एक संस्मरण
देशभक्त और निष्काम समाज सेवक पंडित अमरनाथ शर्मा

धर्म के ज्योतिपुंज पंडित अमरनाथ शर्मा का जन्म 2 फरवरी 1898 को सरगोधा जिले के शाहपुर गांव में आंगरिस गोत्र के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनकी विलक्षण प्रतिभा पर मुग्ध होकर पंडित मदन मोहन मालवीय जी इनके पिता से यह कह कर इन्हें मांग लाए थे कि इस लड़के के कर्म मात्र आजीविका कमाना ही नहीं है।

मालवीय जी ने इस नवयुवक को गोस्वामी गणेशदत्त को सौंपते हुए कहा था कि मैं तुम्हें एक ऐसा हीरा दे रहा हूं, जिसके सहारे तुम सनातन ज्योति को जहां भी प्रज्वलित करना चाहोगे, कर सकोगे।

अपने गुरु जी के आशीर्वाद को शिरोधार्य कर पं. अमर नाथ शर्मा ने उत्तर भारत और विशेषत: हिमाचल प्रदेश में शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछा दिया।

इसी संकटापन्न समय में अपने प्रयत्नों के फलस्वरूप अल्प समय में ही 38 हाईस्कूल एक पॉलिटैक्निक कॉलेज, एक बी.एड. कॉलेज, 2 जे.बी.टी. स्कूल संचालित किए, पंजाब, हरियाणा व चंडीगढ़ की सनातन धर्म शिक्षा संस्थाओं के प्रबंध में भी उनकी अहम भूमिका रही।

पंडित अमरनाथ शर्मा जी ने शिक्षा जगत को ही समृद्ध नहीं किया बल्कि जनता को रोगों से मुक्ति दिलाने के लिए 11 चिकित्सालयों का संचालन कर पुण्य का कार्य किया। इन्होंने जगह-जगह पर देवालय बनवाए और सनातन धर्म सभाओं का गठन किया। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के आप कार्यकारी प्रधान भी रहे।

पंडित जी 10 वर्ष तक पंजाब विधानसभा, के सदस्य रहे। प्राचीन पंजाब की हिन्दी क्षेत्रीय समिति के 6 वर्ष तक चेयरमैन तथा हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रधान रहे और फिर राजनीति से संन्यास लेकर आप समाज सेवा के पावन कार्य में जुट गए।

पंडित जी गरीबों के सच्चे हितैषी थे। आप धन की शक्ति न रखते हुए भी दूसरों से मांग कर या अपना पेट-काट कर गरीबों की मदद करना अपना कर्म और धर्म समझते थे।

श्री सनातन धर्म महावीर दल की प्रगति के लिए आपने आजीवन कार्य किया, आप महावीर दल के आजीवन कार्यकारी प्रधान रहे।

पंजाब में आतंकवाद उभरने के बाद पंडित जी ने उग्रवाद के शिकार परिवारों को सहायता जुटाई। 17 फरवरी 1989 को आप अपनी संसारिक यात्रा पूर्ण कर स्वर्ग लोक सिधार गये।

गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म
शिक्षा समिति, बैजनाथ

सनातन धर्म के प्रतीक राम

डॉ. कामदेव झा
प्राचार्य
डी.ए.वी कॉलेज, पिहोवा (कुरूक्षेत्र)

राम सनातन धर्म के पुरोधा के रूप में विश्व विख्यात हैं। भारत वर्ष में समस्त प्राणी के मानस में राम विराजमान हैं। कोटिशः साधक राम नाम जपकर मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं। राम का नाम जपते हुये त्रिविध-ताप से भी मुक्ति मिल जाती हैं इसलिये कहा जाता है कि दैविक दैहिक भौतिक तापा। राम राज्य काहू नहि व्यापा। श्री राम के साम्राज्य में किसी प्रकार का ताप नहीं था। इसी कारण आज भी राम राज्य का स्वप्न लेकर नेतागेण समाज में प्रतिष्ठा पाने का यत्न करते रहते हैं। सनातन धर्म का आधार ही राम हैं। राम के विषय में कहा जाता है कि 'रमन्ते योगिनो यत्र राम इत्युच्यते', अर्थात् जहाँ योगी जन रमण करते रहते हैं, वहीं तो राम हैं। रामभक्त हनुमान् भी राम का नाम जपकर संसार में रामभक्त के रूप में प्रसिद्ध हुये। स्वयं सीता को अपना परिचय देते हुए सुन्दरकाण्ड में कहा है कि ''दोसोऽहं कौसलेन्द्रस्य''[1] - अर्थात् मैं कौसलेन्द्र का दास हूँ। भारतवर्ष में श्री राम को अपना आदर्श मानकर प्रत्येक प्राणी अपने चरित्र का निर्माण कर संसार में यशस्वी बनने की कामना करता है। सनातन धर्म का मूलाधार श्री राम विश्व के लिये अराध्य एवं उपास्य हैं। हर माता अपनी सन्तान में राम की झलक पाने की इच्छा करती है। राम ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं कि उनका नाम ग्रहण से ही समस्त अन्धकार स्वतः मिट जाता है। और मानव का जीवन जगमग हो उठता है। सनातन धर्म के प्रतीक राम ने तो अधम से अधम नारी माता शबरी को भी नवधा भक्ति का ज्ञान देकर ब्रह्म रूप में विलीन कर संसार को बता दिया कि राम कैसे भक्तवत्सल हैं। स्वयं राम माता शबरी को बताते हैं कि हे भामिनी! मैं तो एक ही सम्बन्ध भक्ति का मानता हूँ जो मुझे तुम्हारे पास लेकर आया है। जैसा कि महात्मा तुलसी ने लिखा है -

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता।।[2]

सनातन धर्म का धर्मध्वज स्वरूप श्री राम का सीधा सन्देश है कि किसी भी जाति, धर्म में होकर भी यदि वह भक्तिहीन है तो वह उसी प्रकार शोभा विहीन होता है जैसे जल विहीन बादल अशोभनीय होता है। जैसा कि मानस में कहा गया है -

भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिय जैसा।।[3]

राम का यही स्वरूप जगत् में प्रसिद्ध कर दिया। उन्होंने शबरी माता को नवधा[4] भक्ति का ज्ञान देकर उन्हें हरिपद में लीन कर दिया और योगाग्नि में शरीर को जला दिया। जैसा कि तुलसी ने मानस में स्पष्ट किया है- 'तजि जोग पावक देह हरपिद लीन भइ जहँ नहिं फिरे। राम ने उस अधम नारी माता

शबरी को वहाँ पहुंचा दिया जहाँ से फिर लोग लौटते नहीं हैं। आखिर उन्हें हरिपद क्यों न मिलता मातंग ऋषि की शिष्या जो ठहरीं। उन्हें तो अनन्य भक्ति के रस का आनन्द मिलना ही था। परमधाम से कोई कभी लोटता नहीं। इसका प्रमाण हमें गीता से भी मिलता है जहाँ कहा गया है कि जो लोग वहाँ पहुंचते हैं तो पुनः भौतिक शरीर में लोटकर नहीं आ पाते। ''यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।''[5] ऐसे हैं हमारे सनातन धर्म के पुरोधा राम। राम ने अपने रामावतार में तरह-तरह के विलक्षण और अद्वितीय कार्य किये। उन्होंने माता शबरी की तरह माता अहल्या को भी मुक्ति प्रदान कर त्रिलोक में प्रसिद्ध हुए। माता अहल्या तो उन पञ्च कन्याओं[6] में परिगणित हैं जिनका नाम स्मरण से ही मानव के समस्त पाप स्वतः नष्ट हो जाते हैं। जैसा कि पञ्च कन्याओं में अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा और मन्दोदरी मानी जाती हैं। इनका नित्य नाम स्मरण से ही महा पातक का नाश हो जाता है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना जरूरी है कि माता अहल्या ब्रह्मा की सर्वप्रथम स्त्री रचना के रूप में प्रसिद्ध हैं। जिसे उन्होंने महर्षि गौतम को दिया। श्री राम ने नारी की रक्षा कर सनातन धर्म के लिये त्रिलोक में उदाहरण बन गये। जब वे विश्वामित्र मुनि के साथ मिथिला जा रहे थे। तो मार्ग में उन्होंने एक शिला को देखा। उन्हें समस्त कथा महर्षि विश्वामित्र ने सुनाई जैसा कि मानस में तुलसी ने लिखा है - ''पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी।[7] सकल कथा मुनि कहा बिसेषी।'' मुनि विश्वमित्र ने राम से कहा कि हे राम! गौतम के शाप से अहल्या पत्थर बनी हुई हैं। आप अपने चरण कमल रज से कृपा करें और इनका उद्धार कर कृतार्थ करें। जैसा कि मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है -

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहुँ रघुबीर।।[8]

यहाँ यह भी देखने योग्य है कि गोस्वामी ने मानस में अहल्या को गौतम ऋषि के शाप से पत्थर हो जाने की बात कही है। जबकि वाल्मीकि रामायण में शिला होने की बात नहीं कही गयी है। एक और अन्तर देखने को मिला है कि दूसरी ओर मानस की अहल्या श्रीराम के चरणों में लिपट जाती हैं जबकि वाल्मीकि रामायण में राम और लक्ष्मण दोनों ने माता अहल्या के चरणों का स्पर्श करते हैं। जैसा कि महर्षि वाल्मीकि ने राम और लक्ष्मण के द्वारा माता अहल्या के चरण स्पर्श की चर्चा की है -

राघवौ तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा।[9]

इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि राघव एवं लक्ष्मण दोनो ने माता अहल्या का चरण स्पर्श किया। दूसरी ओर मानस की अहल्या माता श्री राम को देखकर पुलकित हो उठी और अपने परम सौभाग्य से राम का दर्शन करते ही अवाक् (वाणी रहित) हो गयी। राम के चरणों से लिपट गयी और आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी -

अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही।।[10]

वाल्मीकि ने कहा है कि माता अहल्या राम के दर्शन मात्र से शाप मुक्त हुई जबकि मानस में राम के पाद-स्पर्श से शापमुक्त हुई। वाल्मीकि ने पत्थर होने की बात नहीं की है उन्होंने कहा है कि अहल्या

शाप से दुर्निरीक्ष्य हो गयी। उनका दर्शन कठिन से होने योग्य बन गया–

सा हि गौतमवाक्येन दुर्निरीक्ष्या बभूव ह।[11]

गौतम ऋषि के शाप से मुक्त अहल्या इस प्रकार दुर्निरीक्ष्य हुई कि इस लोक के मनुष्य तो क्या देव और असुर की भी दृष्टि से परे हो गयी। जैसा कि वाल्मीकि ने कहा है –

ददर्श च महाभागां तपसा द्योतित प्रभाम्।
लौकैरपि समागम्य दुर्निरीक्ष्यां सुरासुरैः।।[12]

शाप से ऐसी स्थिति हुई कि सुर और असुर वहाँ आकर भी देख नहीं सकते थे। उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि वाल्मीकि की राम-कथा में अहल्या अदृश्य रही न कि पत्थर बनी। सनातन धर्म के पुरोधा राम तो राम ही थे। जिनके विषय में साकेत महाकाव्य के महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने सुन्दर ढंग से राम का वर्णन किया है जो अमर वाक्य बन गया –

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।[13]

भारतीय संस्कृति के धर्मस्वरूप श्री राम के विषय में वसिष्ठ मुनि ने ठीक कहा है कि राम वन जा रहे हैं। तब भी चिन्ता की कोई बात नहीं है, क्योंकि राम जहाँ नहीं हैं वह राष्ट्र नहीं है और यदि राम वन में रहेंगे तब वह वन ही राष्ट्र हो जाएगा –

नहि तद्भविता राष्ट्रंयत्र रामो न भूपितः।
तद् वनं भविता राष्ट्रं यत्र रामो निवत्स्यति।।[14]

इस सन्दर्भ से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि राम अपने आप में राष्ट्र हैं वे भारतीय संस्कृति के संरक्षक और धर्म स्वरूप हैं। उनके विषय में शत्रु भी भूरि-भूरि प्रशंसा कर थकते नहीं। जब रावण मारीच को स्वर्णमृग बनकर आश्रम में जाने के लिये कहते हैं तो रावण के मामा मारीच ने रावण को सावधान करते हुए कहा कि हे राक्षसराज रावण! ऐसा अपराध भूल कर भी नहीं करना। राम तो साक्षत् धर्म स्वरूप हैं।

रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानामिव वासवः।।[15]

इसमें राम को साक्षात् धर्म का प्रतिमूर्ति स्वीकार किया है। राम के सम्पर्क में आकर समस्त जीव जन्तु सुसंस्कृत हो गये हैं। राम के समान ही चरित्र के प्रतिमूर्ति लक्ष्मण हैं। किष्किन्धा काण्ड में सुग्रीव द्वारा सीता के आभूषण पहचान के लिये दिये जाने पर लक्ष्मण की उक्ति समस्त मानव जाति के लिये एक अनुपम उदाहरण है। लक्ष्मण कहते हैं कि मैंने तो सीता माता के पायल देखें हुये हैं। उनका नित्य प्रति चरण स्पर्श करने के कारण पायल की पहचान हैं। इस प्रकार का सम्बन्ध सीता माता के साथ लक्ष्मण का रहा है। आज के परिप्रेक्ष्य में राम एवं लक्ष्मण का चरित्र सर्वथा अनुकरणीय है। जैसा कि लक्ष्मण ने कहा है –

नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।[16]

राम के समान लक्ष्मण भी संसार का अनुकरणीय पात्र हैं। ये सब सनातन धर्म के संवाहक हैं। इनके पदचिन्हों पर चलकर ही राष्ट्र सुखमय हो सकता है। रामायण की इस पंक्ति को देखकर लगता है कि मनुस्मृति का कथन सर्वथा सत्य है। जहाँ कहा गया है कि हमारे ऋषियों ने अपने चरित्र को मॉडल बनाकर सम्पूर्ण संसार को इस पृथ्वी पर शिक्षित किया। जैसा कि मनु ने मनुस्मृति में कहा है-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।।[17]

जाबालि के द्वारा अयोध्या लौटने के आग्रह को सुनकर धर्म और मर्यादा के रक्षक श्री राम समझाते हुए कहते हैं कि हे ब्राह्मण श्रेष्ठ जाबालि! आप के वचन से मैं सहमत नहीं हूँ क्योंकि यह सनातन सत्य है कि निर्मयादित पुरुष और वैदिक धर्म के विरुद्ध कार्य करने वाला सम्मान प्राप्त नहीं करता। जैसा कि राम ने कहा -

निर्मयादस्तु पुरुषः पापाचारसमन्वितः।
मानं न लभते सत्सु भिन्नाचरित्र दर्शनः।।[18]

सनातन धर्म के पुरोधा राम आचार पर बल देते हुये और चरित्रवान् बनने का सन्देश देते हुए कहा है कि इस संसार में चरित्र ही बताता है कि कौन शुद्ध और कौन अशुद्ध है। जैसा कि वाल्मीकि के राम ने घोषणा करते हुय कहा है-

चरित्रमेव व्याख्याति शुचिंवा यदि वा शुचिम्।।[19]

इसलिये वेद और स्मृति ग्रन्थों में आचरण को धर्म माना है। इसका उल्लेख मनु ने मनुस्मृति में कहा है कि - आचारः परमो धर्मः।[20] इससे सिद्ध होता है कि आचार सर्वश्रेष्ठ धर्म है। यही सनातन धर्म का आधार स्वरूप है। मनु ने इसी आचार को सर्वस्व मानकर कहा है कि इस आचार से गिरे हुये व्यक्ति को वेद का फल भी नहीं मिलता है -

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।[21]

यही आचार धर्म का मूल है। आचार से ही धर्म का लाभ होता है। इसी कारण महर्षियों ने तपस्या का मूल आचार को ही ग्रहण किया। जैसा कि मनु ने कहा है -

एवमाचरतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम् ।
सर्वस्य तपसो मूलाचारं जगृहुः परम्।।[22]

वेद ही समस्त धर्मों का मूल है। ऐसा उद्घोष करते हुये मनु ने कहा कि वेदोऽखिलोधर्ममूलम्।[23] धर्मशास्त्रों में धर्म पर जितना बल दिया गया है उसके प्रतीक तो स्वयं राम ही हैं। इसलिये नारद ने वाल्मीकि को समझाते हुये कहा है कि हे कविवर! धर्म और सत्य के रक्षक राम ही हैं। राम सत्यव्रती हैं। सत्य-वचन के प्रतिपादन हेतु ही उन्होंने वन-गमन को स्वीकार किया। ऐसे सदा प्रजारंजन में लीन सनातन धर्म के संवाहक राम ही हैं। जिन पर यह लोक टिका हुआ है। जैसा कि कहा गया है -

धर्मज्ञः सत्यसंघश्च प्रजानां च हिते रतः।[24]

राम में यह समस्त गुण समाहित हैं। इसीलिये तो सनातन धर्म के संरक्षक के रूप में विश्वविख्यात हैं। राम के अवतार कृष्ण के विषय में अर्जुन स्वयं कह रहे हैं कि हे कृष्ण! आप तो सनातन पुरुष स्वयं हैं। श्रीमद्‌भगवद् गीता में अर्जुन विराट रूप का दर्शन कर बता रहे हैं कि हे परमपुरुष! आप अविनाशी, अत्यन्त जानने योग्य हैं, आप ही इस जगत् के आधार रूप हैं, इस संसार के शाश्वत धर्म के रक्षक हैं और सनातन परम पुरुष आप ही हैं। जैसा कि गीता में कहा गया है -

त्वक्षरं परमं वेदिव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्म गोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषोमतो मे।।[25]

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में अर्जुन के द्वारा स्पष्ट किया है कि राम का अवतार श्रीकृष्ण स्वयं धर्म स्वरूप एवं धर्म के रक्षक हैं। श्री राम ही धर्म के अवतार हैं। इसीलिये गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है कि जब जब धर्म का पतन होता है तब मैं अधर्म के नाश हेतु इस पृथ्वी पर अवतरित होता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।[26]

इससे स्पष्ट होता है कि अधर्म की वृद्धि को समाप्त करने हेतु समय-समय पर अवतरित हुआ करते हैं। इसलिये यहाँ राम भी धर्म की स्थापना हेतु और सनातन धर्म की रक्षा हेतु अवतरित हुये हैं। जब रावण का अत्याचार इस पृथ्वी पर बढ़ गया तब स्वयं विष्णु ने देवताओं से कहा कि मेरा आप लोगों की रक्षा हेतु पृथ्वी पर अवतरण होना है। इससे सिद्ध होता है कि सनातन धर्म के रक्षक राम का अवतरण ही धर्म-रक्षा के लिये हुआ है। सीता भी स्वयं अग्नि-परीक्षा के समय अग्नि प्रवेश से पूर्व कहती है कि धर्म के मर्म को जानने वाला राघव के अतिरिक्त किसी का ध्यान नहीं किया हो तो यह अग्नि मेरी रक्षा करें। इस प्रकार यहाँ सीता ने भी राम का धर्मज्ञ कहकर सम्बोधन किया है। जिससे सिद्ध होता है कि श्रीराम धर्म के रक्षक हैं -

राघवं सर्वधर्मज्ञं तथा मां पातु पावकः[27]

राम ऐसे दयालु हैं कि शत्रु के लिए भी उनका हृदय द्रवित हो जाता है। वे घोषणा करते हैं कि चाहे रावण हो या विभीषण जो मेरे शरण में आ गया तो मैं अभयदान दे देता हूँ। इस प्रकार की घोषणा करते हुये कहा है कि -

अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम।[28]

उन्होंने सुग्रीव को साफ-साफ कहा कि हे कपिश्रेष्ठ! रावण हो या विभीषण तुम ले आओ मैं उसे अभयदान दे दूँगा। जैसा कि राम ने कहा है -

आनयैनं हरिश्रेष्ठ दतमस्याभयं मया।
विभीषणो वा सुग्रीव यदि वा रावणः स्वयम्।।[29]

राम का कथन सुनकर सुग्रीव आश्चर्य चकित और गद्‌गद् होकर कहा कि हे धर्मज्ञ! लोकेश्वर शिरोमणि! आपने जो यह श्रेष्ठ धर्म की बात कही है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। क्योंकि आप महान् शक्तिशाली और सन्मार्ग पर स्थित हैं। आप जैसा उदारमना व्यक्ति तो त्रिलोक में दुर्लभ हैं। उनकी

भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये सुग्रीव ने कहा -

किमत्र चित्रं धर्मज्ञ लोकनाथशिखामणे।
यत् त्वमार्यं प्रभाषेथाः सत्ववान् सत्पथे स्थितः।।[30]

ऐतरेयोपनिषद् में तो कहा गया है कि ''परोक्षप्रिया इव देवाः इस तरह स्पष्ट किया गया है कि देवगण परोक्ष में कही हुई प्रशंसा को ही प्रिय समझते हैं। राम के नाम[31] का तो एक एक अक्षर महान् पाप का नाशक हैं। राम का नाम ही समस्त कल्मष को दूर करने वाला और शान्ति प्रदान करने वाला है। इसका सतत् स्मरण ही मोक्ष को प्राप्त कराने में सक्षम है। अतएव श्री राम के नाम की सनातन धर्म में अनुपम महत्ता है। यही कलयुग का उद्धारक है। इसीलिये सनातन परम्परा में कहा जाता है कि -

''कलयुग केवल नाम अधारा। सुमरि-सुमरि नर उतरहि पारा।''

वाल्मीकि की स्पष्ट घोषणा है कि रामचरित तो पाप नाशक, पुण्य प्रदान करने वाला, पवित्र और वेदों के समान पावन है। जो इस रामकथा को पढ़ता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार का डिमडिम घोष करता हुआ सनातन धर्म के गौरव को बढ़ाता हुआ राम का चरित्र विश्व में पठनीय है। इससे अवगत होता है कि सनातन **धर्म** के प्रचार में रामायण की कथा का कितना योगदान है। रामचरित तो है ही अमृत तुल्य। यह सबके लिये अमृतवाणी है। जैसा कि वाल्मीकि ने पाप नाशिनी कथा कहकर सम्पूर्ण विश्व में इसकी महत्ता प्रचारित की है -

इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
यः पठेत् रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।[32]

सच में राम सनातन धर्म के प्रतीक हैं। वे तो साक्षात् धर्मस्वरूप ही हैं। उनसे सनातन धर्म और वैदिक धर्म अक्षुण्ण बना हुआ है। इसीलिये राम को सनातन धर्म का आधार कहा गया है। रामायण का यह भी स्पष्ट उद्घोष है कि यह राम-कथा आयुष्य है। इसके पाठ से आयु की वृद्धि होती है। इसका परायण करने वाले पुत्र पौत्र के साथ स्वर्ग लोक में प्रतिष्ठित होते हैं -

एतदाख्यानमायुष्यं पठन् रामायणं नरः।
सुपुत्र पौत्रः सगणः प्रेत्य स्वर्गे महीयते।।[33]

सनातन धर्म का यह अनुपम वैशिष्ट्य है कि जो इस रामकथा को पढ़ता है उसे फल प्राप्त होता हैं इसमें स्पष्ट कहा गया है कि यह रामायण चारों वर्णों द्वारा पठनीय है- ''कतिपय आलोचकों का कहना है कि इसे शूद्र नहीं पढ़ सकते।'' जबकि महर्षि वाल्मीकि ने चारों वर्णों के वर्णानुसार पाठकों को फल प्राप्ति की बात की है। जैसा कि कहा गया है -

पठन् द्विजोवागृषभत्वमीत् स्यात् क्षत्रियो भूमि पतित्वमीयात्।।
वणिग् जनः पूण्यफलत्वमीयाज्जनश्चशूद्रोऽपि महत्त्वमीयात्।।[34]

सनातन धर्म का यही सौन्दर्य है कि सभी वर्णों के द्वारा यह पावन ग्रन्थ पढ़ने योग्य है। यह विचार समाज के सौन्दर्य को बढ़ाता है।

राम सच में ब्रह्माण्ड नायक हैं। जिनके एक-एक रोम में करोड़ों बह्माण्ड रचे बसे हुये हैं। उनके उदर में अनेकों ब्रह्माण्ड भरे हुये हैं। इसका दर्शन बालकाल में ही ब्रह्माण्ड नायक ने अपनी माँ कौसल्या

को स्वयं कराया था। दर्शन कर माता कौसल्या चकित रह गयी थीं। तब राम ने देखा कि माता तो अब मेरा पालन पुत्रवत् नहीं कर पायेंगी। ऐसा सोचकर बालक राम ने माँ से कहा कि हे माँ! इस रहस्य को आप किसी से मत कहना। इस बात से यह भी संकेत मिलता है कि जो बाल राम अपनी माँ से इस प्रकार गुप्त रहस्य को रहस्य ही बनाए रखने की बात करता है तो क्या यह भी संभव नहीं होगा कि माता कैकेयी से अतिशय प्रेम करने वाला पुत्र राम ने कैकेयी माँ से राक्षसों के संहार हेतु एवं देवगणों की इच्छापूर्ति के लिये और वन हेतु दशरथ से वरदान रूप में चौदह वर्षों का वनवास मँगवा लिया हो। राम ने माता कौसल्या को अपना ब्रह्माण्ड नायक का रूप दिखलाया। जैसा कि तुलसी ने लिखा भी है -

देखरावा मातहि निज उद्‌भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मांड।।[35]

गोस्वामी तुलसीदास ने उत्तरकाण्ड में भी ऐसा ही वर्णन किया है। यहाँ पर महात्मा काकभुशुण्डि ने राम कथा सुनाते हुये गरुड़ को कहा कि हे पक्षीराज! मैंने प्रभु राम के पेट में बहुत सारे ब्रह्माण्डों के समूह देखे हैं। वहाँ उन ब्रह्माण्डों के अनेकों विचित्र लोक थे, जिसकी रचना एक से बढ़कर एक थी। जैसा कि तुलसी ने अपनी कृति मानस में लिखा है-

उदर माझ सुनु अंडजराया। देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया।।
अति विचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका।।[36]

वास्तव में राम और उनकी राम कथा सनातन धर्म की ज्ञान-निधि है। जिसने इस रामामृत सागर में गोता लगा लिया तो समझो कि मोक्ष प्राप्त कर लिया। ऐसे हैं हमारे सनातन धर्म के प्रतीक राम। राम अपने वचन के पक्के थे। उन्होंने सारी व्यथा अपने अन्दर रख ली एवं किसी से भी सांझा नहीं की। ऐसे थे सनातन धर्म के संरक्षक राम। अपनी माता कैकेयी से कहते हैं कि हे माँ! तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं है। मैं पिता के वचन पालन हेतु आग में कूद सकता हूँ और विष पान कर सकता हूँ, क्योंकि राम दो तरह की बात नहीं करता है। जैसा कि राम ने कहा है-

करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते।[37]

इसी कारण राम सबके प्रिय थे यहाँ तक कि माता कैकेयी भी अपना प्रिय कनक-भवन भी अपनी बहू सीता को दे दिया था और कहती नहीं थकती थी कि प्रत्येक जन्म में मुझे सीता जैसी बहू और राम जैसा पुत्र हो। यह राम की ही लीला नहीं तो और क्या था कि माता कैकेयी रातों रात बदल सी गयी। जो एक बार राम से जुड़ गया वह जन्म जन्मान्तर तक राम रस में डूबने का प्रयास करेगा ही। इसमें भला क्या सन्देह हो सकता है। सुमन्त्र पर राम का वह प्रभाव पड़ा कि राम के बिना घर लौटते हुये पागल के समान रो रोकर टूट चुके थे और कहते हैं कि राम के बिना धिक्कार है इस जीवन को। उन्होंने अपनी दशा का वर्णन कुछ ऐसा किया है -

सोच सुमंत्र विकल दुख दीना।
धिक जीवन रघुबीर बिहीना।।[38]

सुमन्त्र राम, सीता और लक्ष्मण को छोड़कर किस प्रकार पीड़ित होकर लौट रहे हैं, इसका वर्णन गोस्वामी जी ने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है और कहा है कि सुमन्त्र परेशान होकर इस प्रकार लौटे जैसे कोई व्यापारी अपना मूलधन गंवा कर लौट रहा हो। जैसा मानस में लिखा है -

फिरेउ बनिक जिमि मूर गबाँई।[39]

इसी प्रकार विचित्र गति अंगद की थी। अंगद कह रहे हैं कि हे प्रभु! मैं आपको छोड़कर कहाँ जाऊँ? मेरे पिता ने तो मुझे आपकी गोद में डाल दिया था। अब आप ही कहिये कि मैं कहाँ जाऊँ ?

"जाउँ कहाँ तजि पद जल जाता।"[40]

अंगद बिलखते हुये कहते हैं कि हे प्रभु! मैं तो आप के पास रहकर नीच से नीच सेवा करूँगा। आप अपने शरण में स्थान दें ताकि मैं आपके चरण कमल को देख देखकर भव-सागर पार कर जाऊँ। इस प्रकार बारम्बार विनती करता हुआ कहता है कि

नीचि टहल गृह कै सब कटिहउँ। पद पंकजबिलोकिभव तरिहउँ।[41]

इस प्रकार राम सच में एक विलक्षण और अनुपम रामायण के अनूठे पात्र हैं। राम सनातन धर्म के संवाहक व संरक्षक हैं। सनातन धर्म का धर्मध्वज राम पर ही टिका हुआ है। सनातन काल से राम भारतीय समाज के पूज्य एवं आराध्य रहे हैं। इन्हीं के ऊपर समस्त सन्त समाज अपना मस्तक उन्नत कर विश्व के मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते रहे हैं। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सनातन समाज में राम का नाम लेकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते रहे हैं। इसी रामामृत का पान करने हेतु सदा साधुजन ललायित रहते हैं। ऐसे हैं हमारे सनातन धर्म के आराध्य राम इति शम्।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, 42.34
2. रामचरितमानस, 3.34.2
3. वही 3.34.3
4. वही 3.34.4
5. श्रीमद्भगवद्गीता, 15.6
6. संस्कृत हिन्दी कोश (वामन शिवराम आप्टे) पृ. 134
7. मानस, 1.210.6
8. वही 1.210
9. वा.रा. 1.49.17
10. मानस, 1.21. छन्द
11. वा.रा. 1.49.16
12. वही, 1.49.13
13. साकेत, सर्ग 5
14. वा.रा. 2.37.29
15. वही 3.37.13
16. वही 4.6.22
17. मनुस्मृतिः, 2.20
18. वा.रा. 2.109.3
19. वही 2.109.4
20. मनुस्मृति, 1.108
21. वही 1.109
22. वही 1.10
23. वही 2.6
24. वा.रा. 1.112
25. श्रीमद्भगवद्गीता, 11.18
26. वही 4.7
27. वा.रा. 6.116.27
28. वही 6.18.33
29. वही 6.18.34
30. वही 6.18.36
31. ऐतरेयोपनिषद्, 1.3.14
32. वा.रा.1.1.98
33. वही 1.1.99
34. वही 1.1.100
35. मानस 1.201 (दोहा)
36. वही 7.79 (ख) 2
37. वही 2018.30
38. वही 2.143.2
39. वही 2.98.4
40. वही 7.17 (ख) 2
41. वही 7.17 (ख) 4

गोस्वामी तुलसीदास और रामचरितमानस

डॉ. चित्तरंजन दयाल सिंह कौशल
1761/8, विष्णु कालोनी, कुरुक्षेत्र

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण दरिद्र की झोपड़ी से लेकर राजभवनों तक में विद्यमान है। रामचरितमानस के रचनाकार अवधीभाषी कवि महात्मा तुलसीदास ने अपने सम्बन्ध में विस्तार से कुछ नहीं लिखा। गोस्वामी जी के भक्तों ने अन्तःसाक्ष्य व बाह्यसाक्ष्य के आधार पर जो कुछ खोज निकाला तदनुसार गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजापुर ग्राम (प्रयाग) में हुआ। यह ग्राम यमुना जी के तीर पर करनी स्टेशन से 19 मील पर स्थित है। यहाँ पर स्मृति स्वरूप एक कुटी अब तक बनी हुई है। मन्दिर और पुस्तकालय भी विद्यमान है। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। कान्यकुब्ज द्विवेदी कुलीन गोस्वामी जी, पाठक परिवार से आई अपनी धर्मपत्नी तुलसी के अप्रतिम सौन्दर्य पर अत्यन्त मुग्ध रहते थे। इसका एक कारण यह भी था कि तुलसीदास का बचपन अभावों में बीता था। लोग स्वयं इनका नाम रामबोला बतलाते हैं। कई शोधक लिखते हैं कि अशुभ मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया था।

यह भी सुदृढ़ मत है कि तुलसीदास जी के बाल्यकाल में ही माता-पिता का अन्त हो चुका था, इस कारण वे अनाथ थे। बिना माता-पिता के जैसी शिक्षा-दीक्षा हो सकती है, तुलसीदास जी की भी उससे अधिक न हुई। महात्मा नर हरिदास जी के यहाँ इनकी बाल्यावस्था बीती। गुरुमुख से यहीं कई बार रामकथा सुनने का इन्हें सुअवसर बचपन में प्राप्त हुआ।

मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सु सूकर खेत।
समुझि नहीं तस बालपन, तब अति रहेउँ अचेत।।

गुरु नरहरि दास से ही आपने राममन्त्र ग्रहण किया। यथा समय आपका विवाह रत्नावली से हुआ। पाठक दीनबन्धु की बेटी रत्नावली को आप बहुत चाहते थे। आपका तारक नामक एक बेटा भी हुआ, पर अल्पायु में ही उसका देहावसान हो गया, होनहार कवि के रसिक हृदय में तो रत्नावली के प्रति मोह और भी अधिक बढ़ता गया। रत्नावली एक बार अपने घर गई हुई थी। रामबोला उसके बिना इतने बेचैन हो गए कि वहीं जा पहुंचे।

इस पर रत्नावली ने कहा - जैसा प्रेम आपका मुझ पर है, वैसा यदि भगवान के चरणरविन्दों में होता, तो क्या कहना था, भव-सागर से पार हो जाते।

अस्थि चर्ममय देह मम, तामे ऐसी प्रीति।
होती जो श्रीराम में तो, होती ये क्यों भवभीति।।

बस यही से रामबोला तुलसी बन वैराग्य पथ के पथिक बन गए। गोस्वामी तुलसीदास विरक्त होकर ईश्वर के अनन्य प्रेमी बन गए। उसी ईश्वरीय प्रेम का यह परिणाम है कि उनसे ऐसी बेजोड़ रामचरित मानस की रचना हुई, जिसकी वाह-वाह सम्पूर्ण धरा पर हो रही है। तुलसीदास जी का हृदय श्रीराम के दिव्य प्रेम से आलोकित हो गया। दोहा-चौपाइयों में रचा ग्रन्थ अमर हो गया। ज्यों-ज्यों कविता व दिव्यता की सूझ-बूझ होती जाती है, त्यों-त्यों तुलसीदास की रामायण का आदर दिनोदिन

बढ़ता जा रहा है। अनेक बंगाली, मराठा विद्वान् रामचरितमानस का सुधापान करने के लिए बड़े चाव से हिन्दी सीखते हैं। हजारों वर्ष पहले तुलसी कवि ने सरयू नदी के पवित्र तट पर जो वीणा बजाई थी, उसकी मधुर तान भारतीय नर-नारियों के हृदय में व कर्णकुहरों में आज भी ध्वनित हो रही है। हिन्दु-समाज के हृदय में रामायण की अयोध्या नितनयी होकर चिरकाल से प्रतिष्ठित है। संसार में हिन्दु जाति का जब तक अस्तित्व रहेगा, तब तक उसके हृदय से रामायण का प्रभाव दूर न हो सकेगा।

गोस्वामी तुलसीदास विरक्त होकर मथुरा, वृन्दावन, काशी, कुरुक्षेत्र, जगन्नाथपुरी, प्रयाग और चित्रकूट में विचरण करते रहे। अयोध्या से इन्हें विशेष प्रेम था। अधिकतया अयोध्या में भी रहे काशी में भी अस्सी घाट, गोपाल मंदिर, प्रहलाद घाट कौर नगवा आदि स्थानों पर गोस्वामी तुलसी के स्मृति चिन्ह विद्यमान हैं। अयोध्या में रामचरितमानस का पूर्वार्धभाग ही लिखा गया। तत्पश्चात् काशी में रचनाकार्य सम्पन्न हुआ।

रामचरित मानस की रचना की प्रारम्भिक तिथि को रेखांकित करती हुई एक चौपाई सुप्रसिद्ध है।

सवंत सोरह सौ इकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा।
नौमी सोमवार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा।।

पैदल तीर्थों का भ्रमण करने से उनका स्वास्थ्य भी बना रहता था। वे राम जी के तो भक्त थे ही, हनुमान जी को भी इष्ट की तरह ही स्वीकार करते थे। हरि-हर में कोई भेद नहीं मानते थे। शंकर जी की स्तुति बड़े भावपूर्ण शब्दों में किया करते थे। वाद-विवाद से वे कोसों दूर रहते थे। रामचरितमानस जैसे अद्‌भुत व अत्यन्त लोकप्रिय महाकाव्य को लिखकर भी वे हृदय से बहुत विनम्र रहते थे। समय-समय पर अन्य भक्ति रचनाओं का भी स्वत: स्फूर्त प्रणयन किया। विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, छन्दावली, हनुमान बाहुक आदि भक्तजन के कण्ठहार हैं। नब्बे वर्ष की आयु में ये परमगति को प्राप्त हुए। हर भाव को कभी दोहा व कभी चौपाई में ये व्यक्त कर देते थे।

राम नाम जस बरनिकै, भयो चहत अब मौन।
तुलसी के मुख दीजिए, अब ही तुलसी मौन।।
संवत सोरह सौ असी असी गंग के तीर।
सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर।।

रामचरितमानस तो कल्पवृक्ष की छाया के समान है जो कोई इसके समीप आ जाता है उसके सब कष्ट दूर हो जाते हैं। सप्त काण्ड ही सप्त स्तम्भ है। दोहा सुन्दर शाखा, सोरठा डाली चौपाई पत्ते हैं। छन्द मानों छवि से परिपूर्ण नवीनांकुर है। प्रत्येक अक्षर मानस रूपी कल्पवृक्ष का पुष्प है। इनकी सुरभि प्रत्येक को सुरभित कर देती है। विविध प्रकार का अर्थ ही फल है। सहृदय श्रोता इस फल का स्वाद लेते हैं। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य मानस के त्रिविध रस है। जो कथा सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य मुनि ने भारद्वाज मुनि को सुनाई तत्पश्चात् कागभुशुण्डि जी ने पक्षिराज गरूड़ को इस रामचरित को सुनाया। शिव जी ने इस कथा को एक बार अगस्त्य मुनि से सुना था। यथासम्भव पार्वती की जिज्ञासा पर उसे पुन: सुनाया रामचरित मानस महाकाव्य के रूप में वही रामकथा सर्वजन कल्याण के लिए व स्वान्त: सुखाय गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रस्तुत की।

रामचरितमानस के बालकाण्ड में विस्तृत मंगलाचरण के पश्चात् सतीमोह, सती तनुत्याग, पार्वती

जन्म, पार्वती तप, पार्वती परीक्षा, कामदेव नाश, शिवपार्वती विवाह, रामावतार कारण, नारद तप, नारद अभिमान, विश्वमोहिनी स्वयंवर, नारद कोप, मनुशतरूपातप, मनुशतरूपावरदान, भानुप्रतापकथा, रावण विभव, पृथ्वीदेवादिवैकल्य, विष्णु वरदान, श्रीरामजन्म, कौशल्याकृत श्री रामस्तुति, श्री रामजन्मोत्सव, श्री राम बाल चरित्र, विश्वामित्र अयोध्यागमन, विश्वामित्र यज्ञ रक्षा, अहल्या स्तुति, गंगा-कथा, विश्वामित्र जनक मिलन, विश्वामित्र जनक संवाद, श्री राम जनकपुर निरीक्षण, श्री राम जनक वाटिका निरीक्षण, धनुष पक्ष गमन, धनुषभंग, राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद, श्री राम विवाह श्री राम विदा बारात प्रत्यागमन दशरथादि अवध प्राप्ति, श्री राम विवाहोत्सव, राजसभा में वशिष्ठादि वार्ता, श्री राम भक्ति प्रशंसा आदि प्रसंगों का विस्तार से काव्यात्मक वर्णन किया गया है। राम जन्म के प्रमुख हेतु समझाते हुए हरि के जय-विजय नामक दो द्वारपाल को शापग्रस्त होने पर अगले जन्म में हिरण्यकशिपु और हिरण्या की कथा का सन्दर्भ दिया गया है। नृसिंह का अवतार लेकर हिरण्यकशिपु का उद्धार किया और वाराह का अवतार लेकर हिरण्याक्ष का उद्धार किया गया। तत्पश्चात् अगले जन्म में रावण, कुम्भकर्ण राक्षस बने तो उनके उद्धार के लिए श्रीराम अवतार हुआ। महर्षि कश्यप और अदिति ही पृथ्वीलोक में दशरथ और कौशल्या के रूप में श्री राम के माता-पिता बने। एक दूसरे कल्प में एक अन्य कथा के अनुसार दैत्यराज जलन्धर को जब देवों के पक्ष में युद्धरत शिव जी से भी परास्त न हुआ तो हरि ने देवहित में जलन्धर का छल-बल से मृत्यु के घाट उतार दिया। तो दैत्यराज जलन्धर की पतिव्रता पत्नी ने शाप दिया, जलन्धर अगले जन्म में रावण हुआ। रामावतार ले पुनः उसका उद्धार किया, नारद शाप वाली कथा भी एक कल्प में रामावतार का कारण बनी।

जन्म एक दुइ कहौं बखानी, सावधान सुनु सुमति भवानी।
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ, जय अरू विजय जान सब कोऊ।।
विप्रशाप ते दोनों भाई, तामस असुर देह तिन पाई।
कनकशिपु अरु हारक लोचन, जगत विदित सुरपतिपद मोचन।।
विजयी समरवीर विख्याता, धरि वराह वपु एक निपाता।
ह्वे नरहरि पुनि दूसर मारा, जन प्रह्लाद सुयश विस्तारा।।
भये निशाचर जाय ते, महाबीर बलवान।
कुम्भकर्ण रावण सुभट, सुरविजयी जग जान।।

एक कल्प सुर देखि दुखारे, समर जलन्धर सन सब हारे।
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा, दनुज महाबल मरै न मारा।।
परम सती असुराधिप नारी, तेहि बल ताहि न जीत पुरारि।
छल करि सरेउ तासु उत, प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेइं जान्यो मर्म सब, शाप कोप करि दीन्ह।।
तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना, कौतुक निधि कृपालु भगवाना।
कहाँ जलन्धर रावण भयऊ, रण हति राम परमपद दयऊ।।
एक जन्म कर कारन एहा, जेहि ला रामधरी नर देहा।
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी, सुनि मुनि वरनी कविन्ह घनेरी।।

नारद शाप दीन्ह यकबारा, कल्प एक तेहि लगि अवतारा।
गिरिजा चकित भई सुनि बानी, नारद विष्णुभगत पुनि ज्ञानी।।

इसके अतिरिक्त रामावतार का एक अन्य कारण भी रामचरित मानस में विस्तार में वर्णित किया गया है। स्वायम्भुव मनु और शतरूपा के बड़े पुत्र राजा उत्तान पाद के घर ध्रुव जी ने जन्म लिया। छोटे पुत्र प्रियव्रत हुए। स्वायम्भुव मनु की देवहूति नामकी पुत्री ने जन्म लिया। वह कर्दम मुनि की प्रिय धर्मपत्नी बनी और कपिल देव ऋषि को जन्म दिया। वृद्धावस्था में मनु शतरूपा सब राजकार्य त्याग कर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस द्वादशाक्षर मन्त्र का जाप कर साधनारत हो गए। प्रभु ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए व वर मांगने को कहा। मनु ने प्रभु से अपने समान पुत्र की चाहत का वर प्राप्त कर लिया। कालान्तर में मनु ही अयोध्या के राजा दशरथ बने। श्री राम-जन्म का एक अन्य कारण भी रामचरित मानस में बताया गया है। कैकय देश में सत्यकेतु राजा के दो पुत्र हुए। भानु प्रताप और अरिमर्दन। समय आने पर सत्यकेतु ने बड़े पुत्र भानु प्रताप को राज्य का कार्य भार सौंप दिया और वन में तप हेतु प्रस्थान किया। भानुप्रताप का मंत्री धर्मरुचि बड़ा बुद्धिमान था। एक बार राजा भानुप्रताप उत्तम घोड़े पर चढ़कर शिकार हेतु विन्धयाचल पर्वत पर गया वन में घूमते हुए उसने एक सूअर को देखा। वे उसका शिकार करते-करते बहुत दूर महावन में भटक गये। वन में घूमते हुए राजा ने एक आश्रम देखा व एक साधुवेश में व्यक्ति मिला। प्यासा भानुप्रताप उसे पहचान न पाया। वस्तुतः वह पराजित राजा छद्मवेश में वहां रह रहा था। मीठी-मीठी बातों से उसने राजा का मन मोह लिया व वहीं रात बिताने के लिए कहा परस्पर वार्तालाप में छद्म मुनि ने अपना परिचय देते हुए बताया कि उसका नाम एकतनु है। भानुप्रताप राजा छद्म मुनि की बातों से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उससे एक प्रार्थना की।

जरा मरण दुख रहित तनु, समर न जीतै कोउ।
एक छत्र रिपुहीन महि, राज कल्पशत होउ।।

बुढ़ापा, मृत्यु और सब दुःखों से रहित मेरी देह हो। युद्ध में मुझे कोई जीत न सके व पृथ्वी पर सौ कल्प तक शत्रु रहित एक छत्रराज्य हो। सब विद्वान ब्राह्मणों को भी वश में करने मुझे कोई उपाय बताओ। तब छद्म मुनि ने भानुप्रताप राजा को अपने वश में जानकर कहा कि यदि मैं रसोई करूं और आप परोसें तो उस अन्न को जो खाएगा वो वश में हो जाएगा वहां रात्रि में राजा भानुप्रताप के सो जाने पर छदम मुनि का मित्र कालकेतु राक्षस भी आया। सूअर बनकर इसी ने राजा को भटकाया था। समय पश्चात् राज भानुप्रताप ने मुनि के कथनानुसार छहों रस व चारों प्रकार के भोज्य पदार्थों से सुन्दर व स्वादिष्ट रसोई तैयार करवाई। पुराहित के रूप में छद्म मुनि ने बदला लेने के लिए बहुत प्रकार के मृगों का मांस पकाकर उसमें ब्राह्मण का मांस मिला दिया। जब राजा परोसने लगा तो आकाशवानी हुई कि सभी उठ-उठ कर घर जाओ। इस खाने से बड़ी हानि होगी। विद्वान् ब्राह्मणों ने कुपित होकर राजा को शाप दिया - तू परिवार सहित राक्षस हो जा। कालकेतु राक्षस ने शत्रु राजाओं को युद्ध के लिए निमन्त्रित कर लिया। राजा भानुप्रताप और अरिमर्दन दोनों भाई युद्ध में काम आए। वही राजा भानुप्रताप दस सिर और बीस भुजाओं वाला प्रचण्ड वीर रावण हुआ। अरिमर्दन कुम्भकर्ण बना। धर्मरुचि मन्त्री विभीषण बना। राक्षसी कार्यों से धर्म की बहुत हानि देख पृथ्वी व्याकुल हुई, गोरूप धरा, देवता, मुनि, गन्धर्व सब मिलकर ब्रह्मलोक गए और अपनी व्यथा कथा सुनाई। तब आकाशवाणी हुई तुम्हारे रक्षण के लिए व राक्षसों के विनाश के लिए मैं मनुष्य का शरीर धारण करूंगा। कश्यप और अदिति के वचन सत्य करने

व नारद के शाप कथन को सत्य करने में अपनी परम शक्ति सीता के साथ उत्तम सूर्य वंश में अवतार लूंगा। रामावतार की वे सब कथाएं रामचरितमानस में विस्तार से कही गई हैं। कालान्तर में पृथ्वीतल में वे देवता वनचरों की देह धारण कर प्रकट हुए। राजा दशरथ और रानी कौशल्या ने राम जी को जन्म दिया। भगवान् श्री राम ही तुलसी के आराध्य हैं। बालकाण्ड श्री राम का चरण है। अयोध्याकाण्ड श्रीराम की जंघा है। अरण्यकाण्ड श्री राम का उदर है। किष्किन्धाकाण्ड श्री राम का हृदय है। सुन्दर काण्ड श्री राम का कण्ठ है। लंका काण्ड श्री राम का मुख है। उत्तरकाण्ड श्री राम का मस्तक है। रामचरितमानस के सात सोपानों में दोहों की कुल संख्या 1074 है। प्रतिदिन 6 दोहों का मध्य गत चौपाइयों के साथ पाठ करने से छः मास में सम्पूर्ण ग्रन्थ का पाठ पूर्ण हो जाता है। भारतवर्ष में विविध भाषाओं में कुल 26 रामायण लिखी गई आज भी उपलब्ध है। वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, स्कन्द रामायण, पद्म रामायण, आनन्द रामायण, गरुड़ रामायण, अद्भुत रामायण, योगरामायण, तुलसीरामायण (रामचरित मानस) राधेश्याम रामायण - ये दस रामायण तो संस्कृत व हिन्दी में हिन्दु लोग बड़े चाव से पढ़ते-पढ़ाते हैं ही, साथ ही भारत की अन्य मान्य भाषाओं में भी रामायण अत्यन्त लोकप्रिय हैं। बंगला में कृत्तिवास रामायण, उड़िया में उत्कल रामायण, मराठी में भावार्थ रामायण व मन्त्र रामायण, गुजराती में गिरधर रामायण, कन्नड में तोरवे रामायण, तमिल में कम्ब रामायण, तेलुगु रामायण व रंगनाथ रामायण व भास्कर रामायण व रघुनाथ रामायण, असमी में रामवचनामृत, नेपाली में भानुभक्त की रामायण, मलयालम में तुजेत्तु रामानुजन एषत्तच्छन रामायण, पंजाबी में दिलशाद कृत रामायण, सिन्धी में कोकिल कलख रामायण सुप्रसिद्ध हैं। घर-घर इसका पाठ अभी भी किया जाता है। और तो और विदेशों में भी श्री रामचरित की धूम मची है। थाईलैण्ड में रामक्येन रामकीर्ति रामायण, मलेशिया में हिमायत श्री राम रामायण के ही विविध रूप प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त साईबेरिया रूस, कम्बोडिया, इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, श्यामदेश, बर्मा, मॉरीशियस, फिजी, कीनिया, श्रीलंका में रामकथा प्रचलित है। फ्रैंच (फ्रांस) में भी रामायण व रामचरित मानस के अनुवाद उपलब्ध हैं।

मातृभक्ति, पितृ आज्ञा पालन, गुरु सेवा, भ्रातृ-स्नेह, मैत्री भाव, प्रजा हित, क्षमाशीलता, भेदभाव राहित्य, प्रकृतिरक्षण, कला-कौशल के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित रामचरितमानस में सर्वत्र मुखरित हुआ है। वस्तुतः राम ही विग्रहवान् धर्म के अवतार हैं। गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस एक सर्वांग सुन्दर ग्रन्थ है। संसार की किसी भाषा में ऐसा उत्तमोत्तम काव्य ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता जो जन-जन के कण्ठ का हार बन चुका हो। हर चौपाई व दोहे का वेदमन्त्र की तरह गुणगान व सम्मान होता है। श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त सभी नवरसों से ओतप्रोत व्यावहारिक व आध्यात्मिक शिक्षाओं से भरा-पूरा रामचरित मानस सबके मन को मोह लेता है। श्री रामचरित मानस के आदर्श पात्र सदाचार, सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम, सेवा, समर्पण व मानवता का सन्देश देते हैं। तुलसी के राम सबके वन्दनीय हैं। श्री रामचरितमानस प्रतिदिन पठनीय, सर्वदा मननीय व सर्वथा अनुकरणीय कृति है। इसके पाठ से निश्चित रूप से आस्तिक मन को सुख शान्ति मिलती है।

> ''रामायण सुर तरु की छाया।
> दुःख भए दूर निकट जोइ आया।।''

विद्वान और विद्यावान में अन्तर

सामाजिक संचार माध्यम से संकलित

What is the difference between highly qualified & well qualified person ?

विद्वान व विद्यावान में अंतर समझना हो तो हनुमान जी व रावण के चरित्र के अंतर को समझना पड़ेगा। आइए शुरू करते हैं श्री हनुमान चालीसा से। तुलसी दास जी ने हनुमान को विद्यावान कहा, विद्वान नहीं।

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।

अब प्रश्न उठता है कि क्या हनुमान जी विद्वान नहीं थे ? जब वे विद्वान नहीं थे तो वे विद्यावान कैसे हुए? ? दोस्तों, विद्वान और विद्यावान में वही अंतर है जो हाइली क्वालिफाइड (उच्च शिक्षित) और वेल क्वालिफाइड (सुशिक्षित) लोगों में है। इन दोनों में बहुत ही बारीक लेकिन महत्वपूर्ण अन्तर है। उदाहरणार्थ रावण विद्वान है और हनुमानजी विद्यावान हैं।

रावण के बारे में कहा जाता है कि उसके दस सिर थे। दरअसल यह एक प्रतीतात्मक वर्णन है। चार वेद और छह: शास्त्र दोनों मिलाकर दस होते हैं। इन्हीं को दस सिर कहा गया है। जिसके सिर में ये दसों भरे हों, वही दसशीश हैं।

रावण वास्तव में विद्वान है, लेकिन विडम्बना देखिए कि वह सीता जी का हरण कर लाया।

विद्वान अक्सर अपनी विद्वता के कारण दूसरों को शान्ति से नहीं रहने देते। उनका अभिमान दूसरों की सीता रूपी शान्ति का हरण कर लेता है। जबकि हनुमान जी उन्हीं खोई हुई सीता रूपी शान्ति को वापस भगवान से मिला देते हैं।

हनुमान जी ने कहा -

विनती करउँ जोरि कर रावन।
सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।

हनुमान जी ने हाथ जोड़कर कहा कि मैं विनती करता हूँ, तो प्रश्न उठता है कि क्या हनुमान जी में बल नहीं है?

नहीं! ऐसी बात नहीं है। विनती दोनों करते हैं - जो "भय" से भरा हो या जो "भाव" से भरा हो। रावन ने कहा, "तुम हो क्या! यहाँ देखो, कितने लोग हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़े हैं ?"

कर जोरे सुर दिसिप विनीता।
भृकुटी विलोकत सकल सभीता।।

यहीं अंतर है विद्वान और विद्यावान में हनुमान जी गये थे रावण को समझाने। यहाँ विद्वान और विद्यावान का मिलन है।

रावण के दरबार में देवता और दिग्पाल भय से हाथ जोड़े खड़े हैं और भृकुटी की ओर देख रहे हैं परन्तु हनुमान जी भय से हाथ जोड़कर नहीं खड़े हैं।

रावण ने कहा भी -

कीधौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही।
देखउँ अति असंक सठ तोही।।

शिक्षा प्राप्त करके जो विनम्र हो जाये, वह विद्यावान है पर जो पढ़ लिखकर अपनी विद्वता के घमंड में अकड़ जाये, वह विद्वान तो हो सकता है लेकिन विद्यावान नहीं।

तुलसी दास जी कहते हैं :-

बरसहिं जलद भूमि नियराये।
जथा नवहिं वुध विद्या पाये।।

(जैसे बादल जल से भरने पर नीचे आ जाते हैं, वैसे ही विचारवान व्यक्ति विद्या पाकर विनम्र हो जाते हैं।)

इसी प्रकार हनुमान जी हैं "विनम्र" और रावण है – "विद्वान"

विद्वान कौन के उत्तर में कहा गया है कि जिसकी मानसिक क्षमता तो खूब हो परन्तु वैचारिक स्तर निम्न हो, साथ ही हृदय में अभिमान भी मल की भांति भरा हुआ हो ...

अब प्रश्न है कि विद्यावान कौन ?

उत्तर है कि जिसके हृदय में भगवान हो और जो दूसरों के हृदय में भी भगवान को बिठाने की बात करे, जो किसी को भी कभी अपने से कमतर नहीं आंके, वही सच्चे अर्थों में विद्यावान है।

हनुमान जी ने कहा – "रावण! तुम विद्वान तो हो पर तुम्हारा हृदय ठीक नहीं है। अगर तुम अपने हृदय को ठीक करना चाहते हो तो मेरी सलाह मानो ...

राम चरन पंक उर धरहू
लंका अचल राज तुम करहू।।

(अपने हृदय में राम जी को बिठा लो और फिर आनंदपूर्वक लंका में राज करो।)

यहाँ हनुमान जी रावण के हृदय में भगवान को बिठाने की बात करते हैं, इसलिये वे विद्यावान हैं।

मनुष्य को केवल विद्वान नहीं बल्कि सदैव विद्यावान बनने का प्रयत्न करना चाहिए। इसी तरह उँची उँची डिग्रियाँ प्राप्त कर कोई विद्वान तो बन सकता है पर विद्यावान नहीं बन सकता। उँची-उँची डिग्रियां प्राप्त कर आप हाइली क्वालीफाइड तो कहला सकते हैं पर वेल क्वालीफाइड नहीं।

पुस्तकों से जो कुछ आप प्राप्त करते हैं वह केवल इनफॉरमेशन यानि सूचनाएँ भर हैं। जब आप इन सूचनाओं को अपने आचरण में उतारते हैं, पढ़ी हुई बातों के अनुसार जीवन जीने की कोशिश करते हैं तभी वह नॉलेज यानि ज्ञान है।

किसी ने सच ही कहा है कि डिग्रियां तो केवल कागज़ का टुकड़ा भर है जो नकली भी हो सकती हैं। योग्यता तो वह है जो आपके आचरण में, आपके व्यवहार में झलकती है। इतना ही नहीं आपने सुना होगा कि Knowledge is power । आपने गलत और अधूरा सुना है। Knowledge is not a power, applied knowledge is power यानि ज्ञान को जब आचरण व व्यवहार में उतारा जाता है तभी वह पावर बनता है। आपकी शक्ति बनती है।

अगर आप वाकई क्वालिफाइड हैं तो आपको कभी किसी को बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी कि आप कितने क्वालीफाइड हैं। आपका क्वालीफिकेशन आपके व्यवहार व आचरण में झलक जाता है। अत: आप चाहे हाइली क्वालीफाइड बनिए या न बनिए पर वेल क्वालीफाइड बनने की कोशिश जरूर कीजिए।

तूने मेरे बारे में सुना नहीं है? तू बहुत निडर दिखता है।

हनुमान जी बोले – "आवश्यक नहीं कि तुम्हारे सामने जो आये, डरता हुआ ही आये।"

रावण बोला – "देख! यहाँ जितने देवता और अन्य खड़े हैं, वे सब डरकर ही खड़े हैं।"

हनुमान जी बोले – "उनके डर का कारण है कि वे "तुम्हारी" भृकुटी की ओर देख रहे हैं।"

भृकुटी विलोकत सकल सभीता ...

परन्तु मैं भगवान राम की भृकुटी की ओर देखता हूँ। उनकी भृकुटी कैसी है? जानना है ? तो सुनो.

भृकुटी विलास सृष्टि लय होई।
सपनेहु संकट परै कि सोई।।

(जिनकी भृकुटी टेढी हो जाये तो प्रलय हो जाये और उनकी ओर देखने वाले पर स्वप्न में भी संकट नहीं आये। मैं उन श्रीराम जी की भृकुटी की ओर देखता हूँ।)

रावण बोला – "यह विचित्र बात है। जब राम जी की भृकुटी की ओर देखते हो तो हाथ हमारे आगे क्यों जोड़ रहे हो ?" तुमने ही कहा था न कि

विनती करउँ जोरि कर रावन।

हनुमान जी बोले – "यह तुम्हारा भ्रम है। हाथ मैं तुम्हें नहीं उन्हीं श्री राम जी को जोड़ रहा हूँ।"

रावण बोला – "वह यहाँ कहाँ हैं?"

हनुमान जी ने कहा कि "यही तो समझाने आया हूँ।" मेरे प्रभु श्री राम जी ने कहा था –

सो अनन्य जाकें असि, मति न टरइ हनुमन्त।
मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामी भगवन्त।।

भगवान ने कहा कि सबमें मुझको देखना। इसीलिये मैं तुम्हें नहीं, बल्कि तुझ में भी भगवान को ही देख रहा हूँ।"

रावण ने पूछा कि तब तुमने ये क्यों कहा ... तुमने मुझे प्रभु व स्वामी क्यों कहा ...

खायउँ फल प्रभु लागी भूखा।
सबके देह परम प्रिय स्वामी।।

यहाँ हनुमान जी रावण को प्रभु और स्वामी कहते हैं। जबकि रावण हनुमानजी को खल और अधम कहकर सम्बोधित करता है।

मृत्यु निकट आई खल तोही।
लागेसि अधम सिखावन मोही।

विद्यावान का लक्षण यही है। अपने को गाली देने वाले में भी जिसे भगवान दिखाई दे, वही विद्यावान है।

विद्यावान का लक्षण बताते हुए कहा गया है –

विद्या ददाति विनयं।
विनयति याति पात्रताम्।।

शास्त्रों में वर्णित "धर्म"

डॉ. विष्णु दत्त शर्मा
प्राचार्य
दीवान कृष्ण किशोर स.धा. आदर्श संस्कृत कॉलेज
अम्बाला छावनी, हरियाणा

"धार्यतेऽनेनाधः पतनात् पुरुषः इति धर्म" अर्थात् जिसकें द्वारा अध:पतन से पुरुष को ऊपर उठाया जाए, वह धर्म है; या जो मनुष्य को पतित होने से बचाता है वह धर्म है। धर्म धारण करने योग्य होता है। इसीलिए "धारणाद् धर्मः" ऐसा कहा गया है। शास्त्रों में निश्चित व्यवस्था, आचरण, नियम पालन करने आदि में धर्म शब्द प्रयुक्त हुआ है। धर्म के सम्बन्ध में आपस्तम्ब धर्म-सूत्र में कहा गया है-

"धर्मज्ञसमयः प्रमाणम् (1-1-2)"

"वेदाश्च (1-1-3)" प्रथम प्रश्न, प्रथम कण्डिका)

अर्थात् धर्मज्ञ वेदों के ज्ञाता हैं और उनका मत ही धर्म है। बौधायन-धर्म-सूत्र में कहा गया है-

"उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदनम् (1-1-1)" उपदिष्टः प्रतिवेदं प्रतिशाखम्। अतीन्द्रियार्थप्रतिपादको नित्यो ग्रन्थराशिः वेदः। तत्प्रतिपाद्यो धर्मः।।

अर्थात् अतीन्द्रिय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला, नित्य ग्रन्थ राशि वेद है और उसके द्वारा प्रतिपाद्य है - धर्म। गौतम धर्म-सूत्र में बताया है।

"वेदो धर्ममूलं तद्विदां च स्मृतिशीले (1-1-2)" अर्थात् वेद ही धर्म का मूल है। अर्थ संग्रह में कहा गया है -

"वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः।" अर्थात् वेद के द्वारा प्रतिपाद्य प्रयोजनवद् अर्थ को धर्म कहते हैं। मनुस्मृति के अनुसार-

"वेदाऽखिलो धर्ममूलम् (2-6)" अर्थात् सम्पूर्ण वेद धर्म का मूल स्रोत है। जैमिनि सूत्र के अनुसार-

"चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः (1-1-2)" अर्थात् इष्ट प्राप्ति के साधन में प्रेरणा देना ही जिसका लक्षण है वही धर्म है। मनुमहाराज ने धर्म के दस लक्षणों को बताया है-

"धृतिक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। (अध्याय-6, श्लोक-92)

इस प्रकार धर्म के सम्बन्ध में नाना विचारों को शास्त्रों में देखा जा सकता है। श्रौत सूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र स्मृति आदि सभी धर्म का प्रतिपादन करने के कारण धर्मशास्त्र हैं।

इनमें से मुख्य रूप से लगभग बयालीस कर्मों का प्रतिपादन किया गया है। इनमें चौदह-श्रौत यज्ञ, सात-पाक यज्ञ पांच महायज्ञ, सोलह संस्कार हैं। श्रौत यज्ञ दो प्रकार के हैं : हविर्यज्ञ, सोमयज्ञ।

हविर्यज्ञ चरुपुरोड़ास के द्वारा हवि से सम्पादित होता है। इसलिए इसको हविर्यज्ञ कहते हैं। इनकी संख्या सात है। अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास, निरूढ़पशुबन्ध, सौत्रामणि।

सोमयज्ञ में सोमरस की प्रधानता है। सोम नामक लता का अभिषव करके प्राप्त रस द्वारा जिस यज्ञ का सम्पादन होता है उसे सोमयज्ञ कहते हैं। इनकी संख्या भी सात हैं। अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोड़शी, अतिरात्र, वाजपेय, आप्तोर्याम।

पाक यज्ञों की संख्या भी सात है-पितृयज्ञ या पितृ श्राद्ध, पार्वण यज्ञ या पार्वण श्राद्ध, अष्टका यज्ञ, श्रावणी यज्ञ, आश्वयुजीयज्ञ, आग्रहायणी यज्ञ, चैत्र यज्ञ।

महायज्ञों की संख्या पांच है—देव यज्ञ, भूतयज्ञ पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, मनुष्य यज्ञ।

संस्कारों के सम्बन्ध में विभिन्न अवधारणाएं हैं। आश्वलायन गृह्यसूत्र के अनुसार ग्यारह, पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार तेरह, बौधायन गृह्यसूत्र के अनुसार अट्ठारह, गौतम धर्मसूत्र के अनुसार आठ ही संस्कार हैं। परन्तु वर्तमान में मुख्यतः सोलह संस्कारों की अत्यन्त प्रसिद्धि है। वे हैं—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन, वेदाध्ययन, महाव्रत, उपनिषद् व्रत, गोदान व्रत, समावर्तन, विवाह, अन्त्येष्टि।

इस प्रकार ये लगभग बयालीस कर्म ही धर्मशास्त्रों के द्वारा प्रतिपादित हैं। इनमें ही वर्णाश्रम व्यवस्था, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, राजा प्रजा के अधिकार, उनके कर्त्तव्य, शासन सम्बन्धी नियम, न्याय प्रणाली, प्रायश्चित, सदाचार आदि का विस्तृत वर्णन है। इसके अतिरिक्त शास्त्रों में आचार को परम धर्म कहा गया है। वह मनुष्य के जीवन का परमावश्यक तत्व है। इस सन्दर्भ में मनुमहाराज कहते हैं-

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः।।
आचाराद्विच्युतो विप्रः न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग् भवेत्।।

आचार मनुष्य के जीवन का परमावश्यक तत्व है। वही परम धर्म है। आचार से हीन विप्र वेद विहित कर्मजन्य फल को प्राप्त नहीं कर सकता। आचार से युक्त होने से ही सम्पूर्ण फलों की प्राप्ति हो सकती है। आचार के सम्बन्ध में एक अन्य वचन प्राप्त होता है-

"आचारहीनाः न पुनन्ति वेदाः,
यद्यप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः।
छन्दास्येनं मृत्युकाले त्यजन्ति,
नीड़ं शकुन्ताः इव जातपक्षाः।।"

आचार से हीन पुरुष को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते भले ही उसने षडङ्गवेदों का अध्ययन क्यों न किया हो। वेद मृत्युकाल में उस आचार हीन व्यक्ति का उसी प्रकार परित्याग कर देता है जिस प्रकार पंखों के आने पर पक्षी नीड़ छोड़कर उड़ जाते हैं। महाभारत में भी आचार आदि का उल्लेख मिलता है। महाभारत के अनुशासन पर्व में तो धर्म की विस्तृत चर्चा की गयी है। वहाँ द्विज के धर्म, क्षत्रिय के धर्म,

वैश्य के धर्म, गृहस्थ के धर्म, वानप्रस्थ के धर्म, सन्यासी के धर्म आदि को विस्तृत रूप से समझाया गया है। राजा के धर्म को समझाते हुए कहा है–

"यज्ञोपवीत धारणं यज्ञो धर्मक्रियास्तथा।
भृत्यानां भरणं धर्मः कृते कर्मण्यमोघता।।
सम्यग्दण्डे स्थितिधर्मो वेदक्रतुक्रियाः।
व्यवहार स्थितिधर्मः सत्यवाक्यरतिस्तथा।।" (महाभारत अनु.प.अ. 141)

यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञ करना, धार्मिक क्रियाओं का अनुष्ठान करना, स्वाश्रित भृत्यों का भरण पोषण करना, अपराध के अनुसार सम्यग् दण्ड देना, वेद विहित कर्म आदि राजा के अनेकों धर्मों का विवेचन किया गया है। इसी प्रकार मनुस्मृति आदि में भी ब्राह्मणादि वर्णों के अनुसार, गृहस्थादि आश्रमों के अनुसार धर्मों का तथा राजा, प्रजा आदि के धर्मों का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यदि धर्म को जानना है तो वेद, धर्मशास्त्र, स्मृति, पुराण, इतिहास आदि को जानना अनिवार्य है। धर्म का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। महाभारत में कहा गया है –

"आहारनिद्राभयमैथुनञ्च,
सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामाधिको विशेषो,
धर्मेण हीनाः पशुभिःसमानाः।।"

धर्म ही एक ऐसा तत्व है जो मनुष्यों को प्राणिमात्र से पृथक् अस्तित्व की प्रतीति कराता है। भक्षण, गमन, सन्तानोत्पत्ति आदि क्रियाएं पशु, पक्षी, जलचर आदि में जिस प्रकार देखी जाती हैं उसी प्रकार मनुष्यों में भी यही क्रियाएं समान रूप से होती है। धर्मविहीन मनुष्य और पशुओं में सम्पूर्ण क्रियाएं समान होने से मनुष्य पशुवत् ही है। धर्म के द्वारा ही मनुष्यत्व प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि धर्म ही मनुष्यों में विद्यमान पशुता को दूर करने का साधन है। शास्त्रानुमोदित धर्म का अनुसरण करना मनुष्य का चरम लक्ष्य होना चाहिए। इससे जीवन परिष्कृत होता है। मनुष्य के जीवन का साफल्य भी इसी में है।

श्राद्ध का शास्त्रीय स्वरूप

डॉक्टर राजेंद्र गोनियल,

प्रधानाचार्य, श्री जगदेव सिंह संस्कृत महाविद्यालय,

सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार

बंधुओं जैसा की आप सभी जानते हैं की भारतीय संस्कृति के मूल आधार वेद है और वेदों के आधार पर ही हमारे यहां पर व्रत, पर्व, उत्सव ,त्यौहार मनाए जाते हैं इसलिए भारतीय संस्कृति संसार की समस्त संस्कृतियों में सर्व श्रेष्ठ स्थान रखती है, क्योंकि अन्यान्य देशों की तुलना में भारतीय संस्कृति पूर्ण वैज्ञानिकता के आधार पर स्थित है। आज हम आपको श्राद्ध का शास्त्रीय स्वरूप क्या है ? इस विषय पर विस्तृत रूप से चर्चा करेंगे।

1. प्रेतान्पितृंश्च निर्दिश्य, भोज्यं यत्प्रियात्मना।
   श्रद्धयादीयते यत्र, तच्छ्राद्धं परिचक्षते।।

2. योऽग्निः क्रव्यात्प्रविवेशनो गृहमतमाहरामि............ पितृयज्ञायदेवम्।
   ऋग्वेद १०/१०/१२

3. श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात्।
   कात्यायनस्मृति १३/०४

4. पितृणां लोकम गच्छन्तु ये मृताः।
   अथर्ववेद १२/२/४६

5. अधामृताः पितृषुसम्भवन्तु।
   अथर्ववेद १८/४/४८

6. तृतीयाह प्रद्यौरितियस्यां पितर आसते।
   अथर्ववेद १८/४/४८

7. अन्तहतोपितृलोक मनुष्य लोकात्।
   तैतिरीय १/६/८/६

8. विधूर्ध्व भागे पितरो वसन्ति।
   सिद्धांतशिरोमणि

9. येनिषताये परोप्ताये चोच्छरिताः।
   सर्वांस्तानग्न आवह्पितृन्हविषे अत्तवे।।
   अथर्ववेद १८/३/३४

10. त्वमग्ने! ङितोजात्वेदोवाड् हव्यानिं सुरभोणि कृत्वाप्रादाःपितृभ्यः ।
    अथर्ववेद१८/३/४२

11. इममोदनंनिदधेब्राहम्णेषुविष्टारिणंलोकजितंस्वर्ग्यम्।।
अथर्ववेद१८/३/८

अर्थात्

1. मृतपितरों के निमित्त जो अपने प्रिय भोज्य पदार्थ ब्राह्मण देवता को श्रद्धापूर्वक प्रदान किया जाता है उस अनुष्ठान का नाम श्राद्ध है।
2. मृत्यु के उपरांत शरीर को दाह संस्कार के द्वारा भस्मसात कर डालने वाला अग्निदेव हमारे घर प्रविष्ट हुआ है उस अग्नि देव को मैं श्राद्ध के निमित शुद्ध करके अपने घर में स्थापित करता हूँ।
3. पितृ यज्ञ का ही दूसरा नाम श्राद्ध है।
4. जो जीवात्मा मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं वह पितृलोक को चले जाएं।
5. मृत्यु के उपरांत पितृ योनि में प्रवेश कर जाओ।
6. अंतरिक्ष से ऊपर वाले भाग को प्रद्यौ कहते हैं जिसमें पितर रहते हैं।
7. पितृ लोक को मनुष्य लोक से इन नेत्रों के द्वारा नहीं देखा जा सकता है।
8. चंद्रमा की ऊपरी कक्षा में वर्तमान पितृलोक में पितर रहते हैं।
9. जिन मृत व्यक्तियों के शरीर भूमि में दफनाए गए हैं और जिनके गंगा आदि नदियों में प्रवाहित कर दिए गए हैं और जिनके जला दिए गए हैं और जिनके शरीर वनों में वृक्षों पर टांग दिए गए हैं। हे अग्नि देव उपर्युक्त चारों प्रकार के और्ध्वदेहिक संस्कार संपन्न उन पितरों को हमारी प्रदान की हुई है वह खाने के लिए इस श्राद्ध कर्म में पहुंचाओ।
10. हे जातवेदा अग्निदेव जिस प्राणी ने अपने कर्मों के अनुसार जहां-जहां भी जन्म धारण किया है उन सबके ज्ञाता तेजस्वी परमात्मा हम आपकी स्तुति करते हैं, आप हमारे द्वारा प्रदान की हुई इन हविओं (सामग्रीयों) को सुगंधित करके तृप्ति के निमित पितरों को प्रदान करो।

11 मैं इस भोजन को ब्राह्मणों में स्थापित करता हूँ अर्थात उन्हें खिलाता हूँ जो सूक्ष्म रूप से अतीव विस्तृत होकर लोक लोकान्तर को जीतता हुआ स्वर्ग तक पहुंचाता है।

श्राद्ध की प्रमाणिकता का रहस्योद्घाटन....

बंधुओं क्योंकि वेद हमारी भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं, इसलिए प्रामाणिक तौर पर हम आपकी समस्याओं का और आपके मन में उठने वाले नए-नए विचारों का समाधान वेदों से उदाहरण देकर संतुष्ट करने का प्रयास करते हैं वस्तुत: बंधुओं वेदों में जहाँ पर अनेक अलौकिक विषयों के प्रतिपादक 50 से 100 प्रमाण उपलब्ध होते हैं वहां पर पारलौकिक परोक्षविषयक मृत श्राद्ध के प्रतिपादक सहस्रों मंत्र उपलब्ध है, यदि यह कहा जाए कि वेद का वेदत्व एक मात्र इसी बात पर निर्भर करता है, कि वह प्रत्यक्ष अनुमान उपमान आदि प्रमाणों से अज्ञात परलोक विषय का एक मात्र प्रधान निरूपक है और इसीलिए श्राद्ध संबंधी छोटी से छोटी क्रिया का भी वेद में विस्तृत रूप से वर्णन विद्यमान है। वहां पारलौकिक परोक्ष विषय मृत श्राद्ध के प्रतिपादक हजारों मंत्र विद्यमान हैं यदि यह कह दिया जाए की

वेद का वेदत्व एकमात्र इसी बात पर निर्भर करता है की वह प्रत्यक्ष अनुमान उपमान आदि की अज्ञात परलोक विषय का एक मात्र प्रधान साधन है। इसलिए श्राद्ध सम्बंधी छोटी से छोटी इकाई का भी वेद में प्रमाण उपलब्ध है।

श्राद्ध में पिण्डदान क्यों....

श्राद्ध में पिण्डदान क्यों करना चाहिए यह जन सामान्य तब तक नहीं समझ पायेगा जब तक वह जन्म और मृत्यु के सम्बन्ध मे कुछ शास्त्रीय रहस्य के विषय में जानकारी प्राप्त ना कर ले ''अंडपिंड " सिद्धांत के अनुसार प्राणियों का देह जड़ और स्थूल है तथा इसका अगोचर अभिमानी जीव चेतन और सूक्ष्म है यह शरीर जहां को कोषात्मक विश्लेषण के अनुसार अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय पांच प्रकार का है वहां प्रकारांतर से स्थूल सूक्ष्म और कारण नाम से तीन प्रकार का भी है इसलिए स्थूल पंच महाभूतों से युक्त होकर भूमंडल में प्रकट होने का नाम ही जन्म है और उनसे भिन्न लोकांतर जन्म का नाम ही मृत्यु है तदनुसार मृत्यु किसी ऐसी भयंकर स्थिति का नाम नहीं है जबकि प्राणी सर्वदा के लिए सर्वथा सत्ताहीन हो जाता हो किंतु स्थूल शरीर को छोड़कर जब जीवात्मा अलग होता है तब भी वह 17 तत्वों से बने सूक्ष्म शरीर से संबंध रखता है सूक्ष्म शरीर के संबंध में लिखा है कि.....

वागादि पंच श्रवणादि पंच ,प्राणानिपंचाभ्रमुखानिपंच।
बुद्धयाद्यविद्याऽपिचकामकर्मणो,
पुर्यष्टकं सूक्ष्म शरीर माहुः।

अर्थात वाणी आदि पांच कर्मेन्द्रिय, कान आदि पांच ज्ञानेन्द्रिय, पंचप्राण, आकाश आदि पांच महाभूत, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, अन्तःकरण, चतुष्टय, अविद्या, काम, तथा कर्म इन 27 तत्वों से बना हुआ यह शरीर है। स्थूल पांच महाभूत और स्थूल कर्मेन्द्रियों को छोडकर शेष 17 तत्वों से युक्त बना हुआ सूक्ष्म शरीर होता है। जब प्राणी की मृत्यु होती है तो उसके हाथ-पांव निष्क्रिय हो जाते हैं इंद्रियों को देखने सुनने की शक्तियां एक-एक करके नष्ट होने लगती हैं प्राण अपान समान उदान और व्यान स्थान भेद से पांचों प्रकार की प्राणवायु अपने अपने स्थानों में चले जाते हैं इस तरह अपान और उदान वायु का तारतम्य बिगड़ते ही प्राणवायु अवरुद्ध हो जाती है इस अवस्था का दूसरा नाम ही इस लोक में मृत्यु प्रसिद्ध है। अतः बुद्धिमान व्यक्ति को इतना कुछ जानने के बाद निश्चित रूप से अपने पितरों के नाम पिंडदान 16 श्राद्ध में अवश्य करना चाहिए क्योंकि 17 तत्वों से युक्त आपके पितर श्राद्ध पक्ष में आपके आसपास आपके घर में सूक्ष्म शरीर को धारण किए हुए निश्चित रुप से विद्यमान रहते हैं इसलिए इतना कुछ जान लेने के बाद भी यदि आप अपने पित्रों को पिंडदान नहीं देंगे भोजन नहीं देंगे खाद्य और पेय पदार्थ नहीं देंगे तो यह मानव देह धारण करना आपके लिए भुवि-भारभूतः होगी।

आपको अधिक से अधिक प्रमाण उपलब्ध करवाने का प्रयास किया है क्योंकि ऊपर जो प्रमाण दिये गये हैं इधर उधर से नहीं लिए गए हैं क्योंकि जो वेद में है वही सृष्टि में है जो वेद में नहीं है कहीं भी नहीं है इसलिए वेद ही संसार के आधार है अतः आपको इसके बाद श्राद्ध क्यों आवश्यक है पिंडदान क्यों आवश्यक है यह जानने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं रह जाती।

सनातन धर्म में कालज्ञान पद्धति

डॉ.श्याम नाथ झा
(एसो. प्रो.)
दीवान कृष्ण किशोर स.धा. आदर्श संस्कृत कॉलेज
अम्बाला छावनी, हरियाणा

भारतीय ज्ञान भण्डार निगम, आगम नाम से प्रसिद्ध शतशः विद्याओं के अन्तर्गत हिन्दू ज्योतिर्विज्ञान का महत्व पूर्ण स्थान है। तैत्तिरीय ब्राह्मण (2-4-6) में अनन्त विद्याओं में ज्योतिर्विज्ञान का वर्णन है। छान्दोग्योपनिषद् (7-1-2) में महर्षि नारद ने अपनी पठित विद्याओं में राशि विद्या, गणित विद्या, दैव विद्या, निधि विद्या, नक्षत्रविद्या एवं फलित ज्योतिष का भी वर्णन है। मुण्डकोपनिषद् में चारों वेदों के साथ ज्योतिष को भी लिया गया है। विष्णु पुराण में 18 विद्याओं के अन्तर्गत ज्योतिष को भी लिया है। इतना ही नहीं बौद्धों के जातकों में भी लिखा है कि तक्षशिला के विश्वविद्यालय में 18 विद्याओं में प्रवीणता करायी जाती थी।

ज्योतिर्विज्ञान का उद्देश्य

विनैतदखिलश्रौतस्मार्तकर्म न सिद्धति।तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणारचितं पुरा ।। (ना.सं) अर्थात् इस ज्योतिर्विज्ञान के बिना हमारे श्रौतसूत्रं और स्मार्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकते। अतः जगत् के हित साधन केलिए ब्रह्माजी ने इसकी प्रथम रचना की। पितामह सिद्धांत का एक श्लोक है-

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।

ज्योतिर्विज्ञान के गुण रूप से अनेक उद्देश्य हैं, किन्तु मुख्य रूप से ''कालविधान'' जिस कालज्ञान के बिना हिन्दू जाति के षोडष संस्कार, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करणों के सम्बन्ध से विविध व्रतोत्सव, मुहूर्तादि विचार, प्रश्न जातक सम्बन्धी होरा विचार तथा शकुन, वायुपरीक्षा आदि नहीं हो सकते। इतना ही नहीं कालज्ञान के विना वैदिक एवं महालयादि पैतृक यज्ञों के अनुष्ठान भी नही हो सकते। अतः सारांश यह है कि ज्योतिर्विज्ञान का मुख्य उद्देश्य कालज्ञान है। इसलिए इसका नाम कालविधानशास्त्र भी है।

कालज्ञान होगा कैसे ?

काल की कृति को देखकर सभी हैरान है। अच्छे-बुरे जीवन का निर्माण करता हुआ काल ही काल लीला कर रहा है। काल ही मृत्यु है,यम है, ब्रह्मा है, विष्णु है और परमेश्वर है। काल ही लोक है, परलोक है। सत्य है, असत्य है, शून्य है, अशून्य है। जो साधक उस शून्य में खोने का प्रयास करते हैं उन्हें निर्वाण प्राप्त होता है। काल की महिमा अगम अगोचर है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। काल को देव भी कहते है। लोक में काल के लक्षणों के ज्ञाता को दैवज्ञ कहते हैं। कालविज्ञान को ज्योतिर्विज्ञान या ज्योतिःशास्त्र भी कहते हैं। इसके ज्ञाता को ज्योतिषी कहते हैं।

काल का विधायक सूर्य ज्योतिर्मय है। ज्योतिर्विज्ञान में ज्योतिर्मय लोकों के प्रकाश से अन्धकार मय आकाश में होनेवाले कर्मो के स्वरूप और उनके फल का विवेचन होता है। इसलिए काल विज्ञान का ज्ञान अन्य विज्ञानों की अपेक्षा बहुत ही श्रेष्ठ है। अन्य विविध विज्ञान बुद्धि के विलास मात्र है। बुद्धि काल की कला होने के कारण कालज्ञान पूर्वापर सम्बन्ध पर ही अवलम्बित होकर कार्य करता है।

सारी विद्यायें, सारी गवेषणाएं और सब प्रकार की खोज में कार्य-कारण सम्बन्ध ही प्रबल और

प्रथम हेतु है। इसलिए कालविज्ञान यदि मनुष्य की राष्ट्र अथवा विश्व की विद्या -बुद्धि, धर्म-अधर्म, उत्थान-पतन, सुख दु:ख आदि का निर्देशक ज्योतिर्लोक ग्रह उपग्रहादि के प्रकाश के अनुसार करता है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। सच्चा दैवज्ञ इस संसार के क्रिया व्यापार को नियन्त्रित अथवा प्रेरित करने वाले ग्रहों की स्थिति, गति, दृष्टि और सम्बन्ध के आधार पर भूत, वर्तमान और भविष्य की घटनाओं को प्रत्यक्ष देख सकता है। परन्तु कालज्ञान होने केलिए कालातीत में स्थित रहना परम आवश्यक है। तभी वह व्यक्ति कालज्ञ के मंच पर बैठने का अधिकारी बन सकता है। प्रपंच में निरन्तर रहने वाला पुरुष दैवज्ञ नहीं हो सकता। ज्योतिर्विदों केलिए अध्यात्म साधन करना परम आवश्यक हो जाता है। जो दैवज्ञ इस मार्ग में जितना अग्रसर होगा काल की लीलाओं के विभिन्न प्रकाश और उनका पारम्परिक मिश्रण तथा प्रभाव उतना ही अधिक स्पष्ट रूप से उनके सामने दिखने लगेंगे।

ज्योतिर्विज्ञान मर्त्यजीवन के मूलभूत सिद्धांतों का ही अध्ययन करता है। अमरत्व के सिद्धांतों का नहीं अत: इसका समावेश अपरा विद्या में होता है। काल की शक्ति है कालिका। कालिका-ज्ञान विषय है तन्त्रविद्या का । अतएव कालविज्ञान का तन्त्रविद्या के साथ घनिष्ठ संबंध है।

ज्योतिर्विज्ञान का विद्यार्थी यदि शक्ति का उपासक है तो वह इसके फल के ज्ञान का अधिकारी हो सकता है। इस प्रकार वे ज्योतिर्लोक का दर्शन दिव्य दृष्टि से कर सकते हैं। वह दीव्यता साधन के बल से चक्षुपटल पर प्राप्त होती है। भारतीय ज्योतिर्विज्ञान का आधार दूरबीन यन्त्र नहीं दिव्य दृष्टि यन्त्र है।

ज्योतिर्विज्ञान का लक्षण

जिस ज्योतिर्विज्ञान के बिना हिन्दू जाति के नित्य नैमित्तिक नहीं चल सकते। इसका वर्णन करते हुए महर्षि नारद कहते हैं-

सिद्धांतसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम्।
वैदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमनुत्तमम्।।

ज्योतिर्विज्ञान की परीक्षा

ज्योतिर्विज्ञान के उद्देश्य और लक्षण का ज्ञान हो जाने पर अब उसकी परीक्षा की घड़ी है। उद्देश्य के अनुसार हिन्दू ज्योतिर्विज्ञान का लक्षण मिलता है अथवा नहीं इसपर विचार करना चाहिये यद्यपि शास्त्र जन्य ज्ञान को 'ज्ञान' , अनुभव जन्य ज्ञान को 'विज्ञान' कहा गया है। ज्योतिष प्रत्यक्ष शास्त्र है,इसको अनुभव किया जा सकता है इसलिए कहते हैं--

अनेकानि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।
विज्ञानं निर्मलं सूक्ष्मं निर्विकल्पं तदव्ययम्।
अज्ञानमितरत्सर्वं विज्ञानमिति तन्मतम्।।

ज्योतिष शास्त्र वेद भगवान का नेत्र है अत: उसकी स्वत: वेदाङ्गो में प्रधानता है। इस नेत्ररूप ज्योतिष शास्त्र के लिए महर्षि शौनक ने लिखा है-'चतुर्लक्षं हि ज्योतिषम्' अर्थात् मूल ज्योतिष 4 लाख श्लोक में है। योग शास्त्र में कहा गया है-'सूर्ये संयामत् भुवनज्ञानम्' अर्थात् सूर्य में संयम का अभ्यासी दिव्य दृष्टि से चतुर्दिक भुवनों को देखता है। इस प्रकार पतंजलि ने योग साधन के द्वारा दिव्य दृष्टि प्राप्त कर ज्योतिर्विज्ञान के अध्ययन का जो मार्ग प्रशस्त किया है ,उसके द्वारा प्राप्त ज्ञान निर्भ्रान्त ज्ञान है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर प्राप्त होता है। लौकिक प्रत्यक्ष में भ्रान्तियाँ हो सकती है। आधुनिक

दूरवीक्षण यन्त्र के द्वारा प्राप्त ज्ञान लौकिक प्रत्यक्ष और अनुमान के आधार पर होने के कारण Hypothetical होता है। अतः इसमें भ्रान्ति होती है। उपर्युक्त संयम से केवल आकाशीय ग्रह, नक्षत्रों, तारों, उल्कापिंडों आदि के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान ही नहीं होता अपितु जीवन जगत के सम्पूर्ण रहस्य शुभाशुभ कर्मो के फलों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। त्रिकाल का ज्ञान होता है। यह ज्ञान लोक परलोक दोनों को प्रत्यक्ष कराने वाला होता है। काल विज्ञान के साथ गणना का अटूट बंधन है इसी कारण से ज्योतिषी को गणक कहते हैं। सूर्यसिद्धांत के अनुसार हिन्दुओं की जो काल गणना की जाती है, उसके सामने विश्व की किसी जाति की कोई भी काल-गणना नगन्य सिद्ध होती है। हमारे शास्त्रों के मत से 432000 सौर वर्षों का कलियुग होता है। द्वापर में 864000 वर्ष होते हैं। त्रेता में 1296000 वर्ष और सतयुग में 1728000 वर्ष। एक महायुग 4320,000 वर्षों का होता है। इसतरह 1000 महायुगों का एक कल्प। यही कल्प ब्रह्मा का एक दिन है। इतने ही वर्षो की एक रात्रि होती है। इस हिसाब से ब्रह्मा की आयु 100 वर्षो की होती है।

नक्षत्रों में जो सबसे अधिक चमकता है उसका नाम योगतारा रखा गया है। योगतारा में संयम करने से चंद्रतारों की गति का ज्ञान होगा। पल-पल घटित होने वाले समय का ज्ञान होगा। योग तारा के ज्ञान से योग ज्योतिष का ज्ञान होगा। योग ज्योतिष से जातक के पृथ्वी पर गर्भ में आने का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होगा। इसलिए तो ज्योतिष ग्रन्थों में गर्भाधान का मुहूर्त बतलाया गया है। इसके अनुसार न तो कोई चलता है और न चलने के लिए संयम रखता है, क्योंकि इस कलिकाल में काम भावना अधिक हीं प्रबल है। इसलिए जैसा बाप वैसी सन्तान जन्म लेती है। अब जंगल में भूत नहीं है। सारे भूत धरती पर जन्म ले रहे है। अच्छी आत्मा तो जन्म लेने के लिए लाइन में ही खड़ी हैं। गर्भाधान के समय में ही -

आयु कर्म च वित्तं च विद्या निधन मेव च। पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।।

श्री राम ने लक्ष्मण से ब्रह्मचर्य की परीक्षा केलिए प्रश्न किया-

पुष्पं में दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा घोषित यौवनम्।
त्रीणि रत्नानि दृष्ट्वैव कस्य नो चलते मनः।।

लक्ष्मण तत्काल उत्तर देते हैं-

पिता यस्य शुचिर्भूतो माता यस्य पतिव्रता ।
ताभ्यां यः सुनुरूत्पन्नस्तस्य नो चलते मनः।।

अन्त में कहना चाहूँगा कि भारतीय कालज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति संसार में अन्यत्र कही नहीं मिलेगी। मात्र इसके अनुसार चलना होगा। लगता है कि पूर्व 300 वर्षों से दिव्य आत्मा का जन्म बन्द हो चुका है। कारण स्पष्ट कर चुका हूँ। इतना कहकर अपनी लेखनी को विराम दे रहा हूँ।

श्रद्धांजलि

पिछले एक वर्ष में हमारे सनातन परिवार के बहुत से पदाधिकारी, सदस्य या उनके परिवार के सदस्य हमसे बिछुड़ गये। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली, श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति, चण्डीगढ़ तथा श्री सनातन धर्म महाबीर दल के सभी सदस्य दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएं प्रकट करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह इन आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दे।

1. श्री दाता राम सहोर – उप प्रधान, भटोली (नया नंगल)
2. श्री रमेश आनन्द – उप प्रधान, दिल्ली
3. श्री लजपत राय नन्दा – उप प्रधान, अमृतसर
4. श्री सरदारी लाल गोस्वामी – महामन्त्री, चण्डीगढ़
5. श्री ओम प्रकाश संग्राय – संयुक्त सचिव, पालमपुर
6. डॉ० आर.पी. विज – प्रशासक, सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार
7. श्री नरेन्द्र मोहन बत्रा – सदस्य, दिल्ली
8. श्री सतीश गोस्वामी – सदस्य, दिल्ली
9. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के उप प्रधान एवं गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म सोसायटी, चण्डीगढ़ के प्रधान, श्री उपकार शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती आदर्श शर्मा जी।
10. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के पूर्व महामंत्री स्व. डॉ. गोस्वामी गिरधारीलाल जी के सुपुत्र श्री लक्ष्मीकान्त गोस्वामी जी।
11. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के कार्यवाहक प्रधान, श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी के दामाद श्री अवनिन्दर मोहन जी, सुपुत्र श्री त्रिलोक मोहन जी।
12. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के मुख्य प्रधान श्री बी.के. गोस्वामी जी के बहनोई श्री पराशर जी।
13. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के मंत्री, श्री यशपाल शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला शर्मा तथा उनके सुपुत्र श्री सुरेश शर्मा जी।
14. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के कार्यकारिणी सदस्य श्री अशोक कुमार गार्गी के दामाद श्री बृज लाल जी।
15. सभा के पूर्व अर्थ एवं कार्यालय मंत्री स्व. श्री बाबू चमनलाल जी की सुपुत्री तथा सभा के संयुक्त मंत्री, श्री वीरेन्द्र कत्याल जी की बहिन, श्री के.एल. मलहेत्रा जी की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्र प्रभा मल्होत्रा।
16. सभा के पूर्व अर्थ एवं कार्यालय मंत्री तथा सप्तऋषि आश्रम के प्रशासक, डॉ. आर.पी.विज जी की धर्मपत्नी श्रीमती पेमिला विज।
17. सभा के संरक्षक बृजकिशोर सोनी जी की माता श्रीमती स्वर्णलता।
18. श्री महावीर दल प्रधान गिदड़वाह, श्री मुकुन्द लाल सिंगल।
19. श्री सनातन धर्म महावीर दल के मेला मन्त्री श्री रतन चन्द जी के सुपुत्र श्री परविन्द्र शर्मा
20. श्री महावीर दल के सीनियर उपप्रधान श्री पवन बंसल जी की बहन श्रीमती निर्मला जी।
21. श्री सनातन धर्म महावीर दल के उपप्रधान श्री राजन गर्ग के पिता श्री चिरंजी लाल गर्ग (पूर्व मन्त्री) तथा माता श्रीमती आशा गर्ग जी।
22. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के समिति के सदस्य श्री वेद प्रकाश शाही के पोते श्री दीपक साही।

धर्मशास्त्रीय पुस्तकालय एवं सनातन धर्म स्कूलों में पुस्तक बैंक की स्थापना हेतु

मान्यवर/मान्या

भारत रत्न माननीय महामना मदनमोहन मालवीय जी द्वारा श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना भारत के सनातन धर्म के ज्ञान और अध्यात्म के सत्य स्वरूप की पुन: स्थापना और प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से की गई थी। जिस की पूर्ति के लिए गोस्वामी गणेशदत्त जी और उनके साथियों व अनुयायियों द्वारा निरन्तर मन्दिरों, गुरुकुलों, कन्या पाठशालाओं, औषधालयों, विद्यालयों, सनातन धर्म सभाओं तथा सनातन धर्म महावीर दलों की स्थापना की जाती रही है। आज भी श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा उनके दिखाये मार्ग पर निरन्तर अग्रसर है।

यह सर्वविदित है कि हमारे देश में अनेक प्रकार का ज्ञान उद्भूत हुआ है। हमारा ऋग्वेद विश्व की सबसे प्राचीन रचना है। ऋग्वेद से लेकर आज तक ये ज्ञान हजारों शास्त्रीय ग्रन्थों और पुस्तक-पुस्तिकाओं, में उपलब्ध हुआ। तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों के विशाल पुस्तकालयों, मन्दिरों आदि में उन्हें सहेजा गया परन्तु विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हमारे देश के ज्ञान और संस्कृति को नष्ट करने के लिए विश्वविद्यालय और मन्दिर तोड़े गए और उनके पुस्तकालयों को आग लगा दी गई। परन्तु आज बचा हुआ साहित्य भी इतना है कि उस में बहुत सी भारतीय मनीषा, मेधा, ज्ञान और विज्ञान संचित है।

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली की शैक्षणिक इकाई होने के नाते अपना परम कर्त्तव्य समझती है कि इस ज्ञान कोष के संरक्षण में अपना योगदान दे। ऐसे पुस्तकालयों की स्थापना करे जिन में अधिकतम शास्त्रीय ग्रन्थों तथा भारत की संस्कृति एवं सनातन धर्म के वास्तविक इतिहास को संरक्षित किया जाए ताकि हमारी वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियां उस ज्ञान का लाभ उठा सकें।

अत: यह निर्णय किया गया है कि सम्प्रति दो पुस्तकालयों की स्थापना की जाए-

एक गोस्वामी गणेश दत्त भवन, सैक्टर 19 ए, चण्डीगढ़ में तथा दूसरा सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में।

इस प्रकल्प के साथ ही पिछड़े क्षेत्रों में स्थित साधनहीन सनातन धर्म स्कूलों में निर्धन छात्रों के लिए पुस्तक बैंक स्थापित करने की भी योजना है।

आप सभी से निवेदन है कि आप यथाशक्ति पुस्तकें, पुस्तकालय फर्नीचर, पुस्तकालय अलमारियाँ अथवा धनराशि से इस प्रकल्प को पूरा करने में हमारा सहयोग करें। कृपया अपने सहयोग के संकल्प की सूचना निम्न ईमेल/फोन पर प्रेषित करें।

आप अपना सहयोग निम्न खातें में डाल सकते है अथवा **चैक या ड्राफ्ट "Sanatan Dharma Education Board" payable at Ambala Cantt** द्वारा भेज सकते हैं।

ACCOUNT HOLDER	:	SANATAN DHARMA EDUCATION BOARD
ACCOUNT NO.	:	1852019141
IFSC CODE	:	CBIN0281156
BANK	:	CENTRAL BANK OF INDIA
BRANCH	:	MAHESH NAGAR BRANCH AMBALA CANTT

सम्पर्क:

ईमेल-punj1981@gmail.com or sanatandharmaeducationboard@gmail.com

फोन-9812053283

डॉ देश बन्धु

कार्यकारी प्रधान, श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति चण्डीगढ़

महामंत्री, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली

Contribution for receieved Dharamshastra Sahitya Pustkalaya at
Goswami Ganesh Dutt Bhawan, Sector 19 A, Chandigarh & Saptrishi Ashram, Haridwar
and
Book Banks at Sanatan Dharma Schools for Economically weak students
(Permanent Continuing Project)

S.No	Name	Place	Amount
1	Shri Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha (Panjab)	New Delhi	100000
2	Shri Sanatan Dharma Education Board	Chandigarh	100000
3	Mr Vaibhav and Ms. Priyanka	Jakarta (Indonesia)	50000
4	Dr (Mrs) Meenakshi Kaushal **(21000/- annually)**	Raipur (Chattishgarh)	31000
5	M/s Theon Pharmaceutical Ltd	Panchkula	31000
6	Rtn Capt Baldev Singh and I. W Vandana Ji	Ambala Cantt	31000
7	Mr Nikhil Madan s/o Sh D R Madan	Delhi	30000
8	Rtn Dr Desh Bandhu & I.W. Dr Bharti Bandhu **(Annually)**	Ambala Cantt	21000
9	Ms. Sumedha & Mr Gaurang	New Jersey (USA)	21000
10	Dr (Mrs) Janak Khanna	Panchkula	21000
11	Dr Rakesh & Dr Shimpa	Mumbai	11111
12	Sh. Balwant Sharma	Jalandhar	11000
13	Rtn Dr Rajinder Singh RC Ambala	Ambala Cantt	11000
14	Dr Asha Sharma	Ambala Cantt	11000
15	Sh. D.R.Madan	Delhi	11000
16	Mrs Nirmala Madan	Delhi	11000
17	I.W. Mrs Shabnum Nath I.W.C. Ambala	Ambala City	11000
18	Dr Nand Kishore Sharma	Ambala Cantt	11000
19	Rtn A. D Gandhi RC Ambala	Ambala Cantt	11000
20	Shri Lalit Gupta	Gurgaon	11000
21	Shri Rakesh Vij	Palampur	11000
22	Rtn Ravinder Dhawan RC Ambala	Ambala City	10000
23	Mrs Rita Gupta & Late Sh Kuldeep Gupta	USA	10000
24	Dr Gurdeep Sharma	Chandigarh	10000
25	Sh Dinesh Babu Khurana	Chandigarh	5100
26	Mrs Savita Dhingra	Phillaur	5100
27	Mr Anil Sharma	Chandigarh	5100
28	Dr Rajiv Kumar & Dr Shuchi Sharma	Hariana	5100
29	Rtn Varun Chopra RC Ambala	Ambala Cantt	5000
30	Mr Pankaj & Dr Sonia Oberoi	Jakarta (Indonesia)	5000
31	Rtn Alok Sood RC Ambala	Ambala Cantt	5000
32	Rtn Anuradha Bakshi RC Ambala	Ambala Cantt	5000
33	Mr Mohan Singh	Ambala Cantt	3100
34	Shri Satish Chander Mehta	Karnal	3100
35	Shri Rajinder Jain	Ambala Cantt	3100

36	Mrs Neelima Khandekar	Ambala Cantt	3100
37	Ms Seema Pandey	Kurukshetra	3100
38	Rtn Dr S C Dhir & I.W. Dr Santosh Dhir RC Ambala	Ambala Cantt	3100
39	Rtn Sanjeev Kumar Aggarwal RC Ambala	Ambala Cantt	3100
40	Ms Sristi Gaur D/o Dr Vijay Sharma	Ambala Cantt	3100
41	Rtn Mahavir Jain RC Ambala	Ambala Cantt	3100
42	Prof P. K Mathur	Ambala Cantt	2200
43	Rtn Anil Verma RC Ambala	Ambala Cantt	2100
44	Dr Aarti Trehan, 218 Ram Nagar,	Ambala City	2100
45	Dr Sunita Pahwa	Shahabad	2100
46	Prof Subhash Vats & Mrs Asha Vats	Chandigarh	2100
47	Mr. Sumit Chibber	Ambala Cantt	2100
48	Mr Ankit Gupta	Kurukshetra	2100
49	Mr Ankur Yadav s/o Prof Indira Yadav	New Delhi	2100
50	Mr Rakesh Sehgal	Chandigarh	2100
51	Mr Sanjeev Sharma	Karnal	2100
52	Mrs Urvashi Issar	Delhi	2100
53	Dr R C Sharma	Ambala Cantt	2100
54	Prof Isaar Singh	Ambala Cantt	2100
55	Mr Partha Rai Chaudhari	Dubai	2000
56	Prof Jagdish Chander	Ambala Cantt	2000
57	Ms Sanjana Jain d/o Dr Divya Jain	Karnal	1100
58	Prof Neelam Ahuja	Ambala Cantt	1100
59	Mrs Danheshwari	Ambala Cantt	1100
60	Mrs Jagroop Kaur	Ambala Cantt	1100
61	Mrs Daizy Gupta	Ambala Cantt	1100
62	Ms Surbhi Thukral	Ambala Cantt	1100
63	Dr Madhu Sharma	Ambala City	1100
64	Dr Saryu Sharma	Raipur Rani	1100
65	Dr Leena Goyal	Kurukshetra	1100
66	Mr Narinder Aggarwal	Ludhiana	1100
67	Mrs Seema Gupta	Ambala Cantt	1100
68	Ms Sanchi Gupta	Hisar	1100
69	Dr A K Sharma	Ambala Cantt	1000
70	Smt Krishna	Ambala Cantt	1000

Total Amount 702011

श्री सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार की गौ-शाला का सदस्यता प्रपत्र

मैं .... श्री सत्पऋषि आश्रम हरिद्वार की गौ-शाला का .... रुपये का आजीवन / वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूँ। इसके लिए नकद/चैक/ड्राफ्ट नं .... श्री सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम भेज रहा हूँ।

नाम: ....

पता: ....

....

दूरभाष नं. .... ई-मेल ....

1. आजीवन सदस्य : रु 11000/-

वार्षिक सदस्य : (क): रु 3100/-, (ख): रु 2100/-, (ग): रु 1100/-

नोट : दान राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

Sapat Rishi Ashram Gaushala, Haridwar
Bank Name: Punjab National Bank, Shanti Kunj, Haridwar
A/c No. 4694000100047524 **IFSC Code:** PUNB0469400

"सनातन संवर्धिनी" - सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

दूरभाष नं. .... ई-मेल ....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी०) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/- रु. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद / चैक / ड्राफ्ट द्वारा श्री सनानत धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) अम्बाला छावनी के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही हूँ।

Sanatan Dharma Education Board
Bank Name: Central Bank of India, Mahesh Nagar Branch, Ambala Cantt
A/c No. 1852019141 **IFSC Code:** CBIN0281156

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

पंडित अमरनाथ शर्मा जी की पुण्य तिथि की झलकियाँ

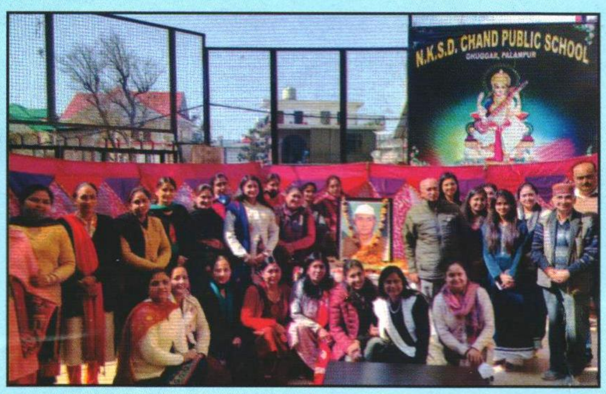

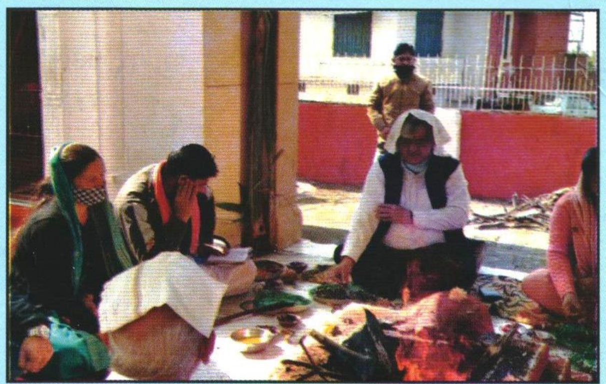

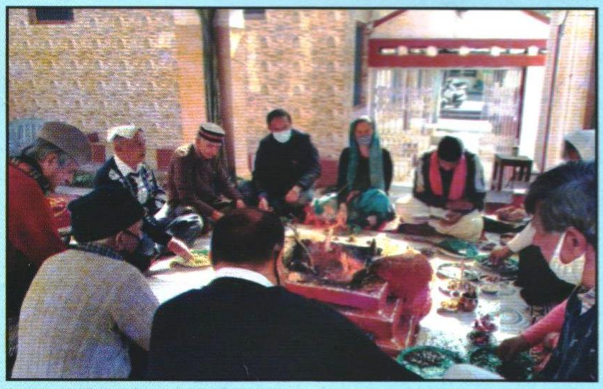

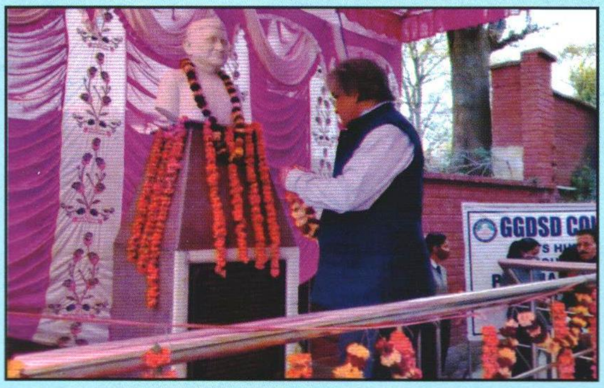

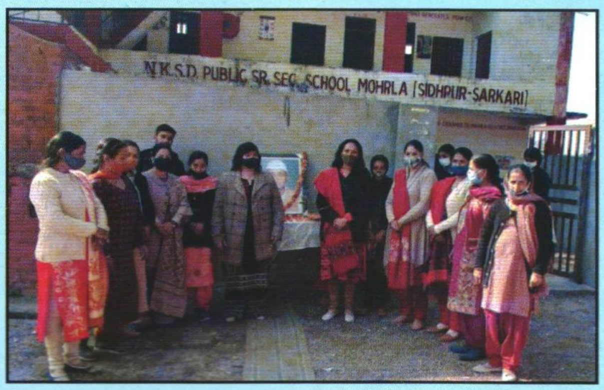

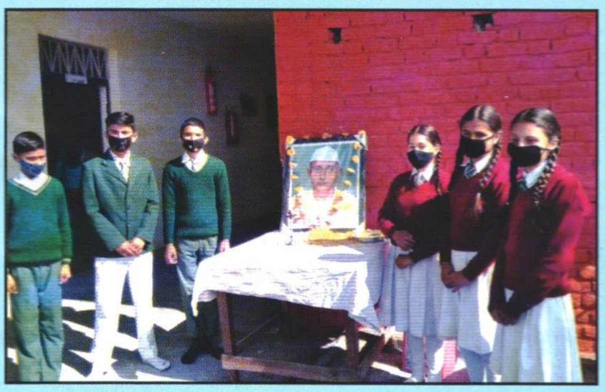

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जयंती की झलकियाँ

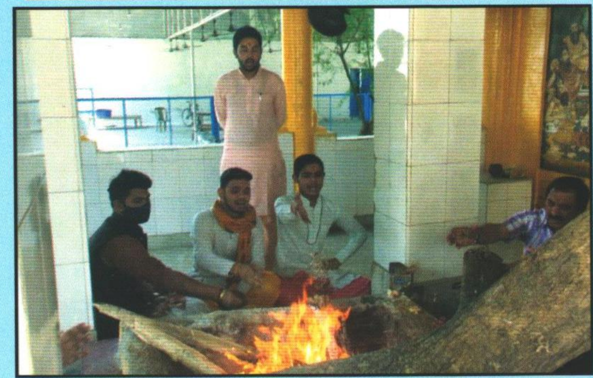

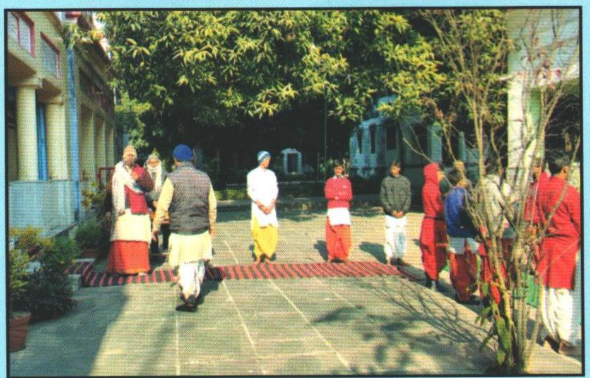

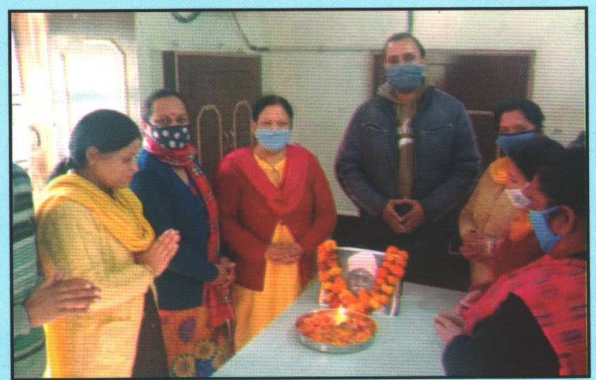

संपादक मण्डल

संरक्षक
डॉ॰ शिवकुमार शर्मा

संपादक मंडल
डॉ॰ नन्द किशोर शर्मा, डॉ॰ भारती बन्धु, डॉ॰ विजय शर्मा

परामर्श मंडल
श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी, श्री उपेन्द्र शर्मा, डॉ॰ देश बन्धु